UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178793

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 W25P
Accession No. H 2108

Author वर्मा, संगम लाल

Title प्रेम की जीत

This book should be returned on or before the date last marked belo

प्रेम की जीत

[मौलिक उपन्यास]

लेखक

श्री सङ्गम लाल वर्मा

प्रकाशक

हिन्दी साहित्य भण्डार
कर्नलगंज, प्रयाग

मूल्य डेढ़ रुपया

पहिला परिच्छेद

श्याम नगर के महाराजा रामबहादुर सिंह बड़े शक्तिशाली राजा थे। वह बड़े न्यायी और धर्मात्मा थे। उनके राज में सब प्रजा सुखी थी। शेर और बकरी एक घाट पानी पीते थे। उन्होंने अपने पुत्र को विलायत विद्या अध्ययन करने के लिए भेजा था।

श्याम नगर बिल्कुल पुराने ढङ्ग से बसा था। रात के समय छोटे-छोटे खपरैले मकानों में कलसे में दीपक टिमटिमाते रहते थे। रथ और बैल गाड़ियाँ, घोड़े गाड़ियों और मोटरों का काम देती थीं। कहीं-कहीं पक्के मकान भी बन गये थे; परन्तु वही पुराने ढङ्ग के बेढंगे। खिड़कियों का तो रवाज ही न था। सड़क अधिकतर पक्की न थीं; परन्तु हरी-हरी लहलहाती हुई खेतियों के देखते ही श्याम नगर वासियों का हृदय गद्गद हो उठता। चारों तरफ़ सुख और शान्ति का साम्राज्य था।

विलायत से लौट कर राजकुमार ने अपनी पुरानी दुनिया को नई दुनिया बनाने का यथाशक्ति प्रयत्न किया। खपरैले मकानों की जगह पक्के

मकान बन गये । जगह-जगह होटल, अस्पताल, दूकानें, नाच घर इत्यादि दिखाई पड़ने लगे । इक्के, ताँगे, बग्घी और मोटरों का पक्की सड़कों पर दिन-रात ताँता बँधा रहता । रेलगाड़ियों का भी प्रचार हो गया था । प्रजा सुखी थी । हर तरफ़ प्रसन्नता के मधुर गीत सुनाई देते थे ।

मेरे माता-पिता जी का जन्म श्याम नगर में हुआ था । वह प्रधान सेना नायक थे । पिता जी के अचानक मारे जाने के पश्चात् मेरी माँ, मुझे लेकर रामपुर मेरे चाचा जी के यहाँ चली आईं और श्याम नगर को सर्वदा के लिए त्याग दिया । त्यागने का कारण भी यथेष्ट था; क्योंकि वहाँ बड़ा षड़यंत्र चल रहा था । कई दल हो गये थे । एक दल के लोगों की दूसरे दल के लोगों से बड़ी तनातनी थी और हमेशा झगड़ा-फ़साद लगा रहता था । प्रत्येक दिन एक न एक बवाल खड़ा हो जाता था ।

मुझे श्याम नगर निवासियों से बहुत प्रेम था और मेरी हार्दिक इच्छा थी कि एक बार श्याम नगर जाकर देखूँ । मेरी माता जी अक्सर कहती थीं—'तुम कुछ करते-धरते नहीं । दिन-रात घूमा ही करते हो ।' मैंने कहा—'ईश्वर की दया से, मुझे कोई काम करने की आवश्यकता ही नहीं है । मेरे पिता जी ने काफ़ी जायदाद मेरे लिए छोड़ी है और मेरे चाचा जी भी काफ़ी रुपया कमाते हैं ।'

माता जी—बेटा, तुम समझते हो कि संसार केवल मौज मात्र है । खाओ, पियो और मस्त रहो—यही उद्देश्य है; परन्तु वास्तव में यह बात नहीं है । प्रत्येक मनुष्य ऋण के बोझ से दबा है और जब तक वह ऋण अदा नहीं कर देता उसकी मुक्ति असम्भव है ।

मैंने कहा—परन्तु मेरे ऊपर तो किसी का कोई ऋण नहीं है।

माता जी—तुम्हारे ऊपर भी तो बहुत बड़ा ऋण है। सुनो।

तपस्या भोग और यज्ञ—यह बड़ा विशाल जीवन चक्र है। मनुष्य कोई संकल्प करता है। उसको पूर्ण करने के लिए जो कोशिश करता है वही उसकी तपस्या है। तपस्या का फल भोग कहलाता है। प्रत्येक भोग कामना से की हुई तपस्या, प्रकृति से लिया हुआ ऋण है। उस ऋण को अदा कर देना ही यज्ञ है। लोग तपस्या करते हैं, फलस्वरूप भोग भी करते हैं परन्तु यज्ञ नहीं करते। अर्थात् तपस्या करने में जिन लोगों ने सहायता पहुँचाई है उनका ऋण अदा नहीं करते। ईश्वर की दृष्टि में वे चोर हैं। जो उधार ली हुई वस्तु को वापस करना नहीं चाहता अर्थात् जो यज्ञ नहीं करता वह पथभ्रष्ट है। माता-पिता ने पढ़ाया-लिखाया, बड़ा किया, उनका ऋण अदा नहीं करते। स्त्रियों से सेवा लेते हैं परन्तु उसका बदला नहीं देते। किसानों की मेहनत लेते हैं परन्तु उनके हित के लिए कोई यज्ञ नहीं करते। अछूतों से सेवा लेते हैं पर उनके उद्धार रूपी कोई यज्ञ नहीं करते। समाज से सेवा लेते हैं परन्तु समाज के हित के लिए कोई काम नहीं करते। इसीलिए संसार दुखी है। देखो प्रकृति जो किसी से उधार लेती है उसको तुरन्त अदा करती है। आसमान पृथ्वी से जितनी भाप लेता है उतना ही पानी उसे वर्षा द्वारा वापस करता है। समुद्र जितना पानी लेता है उतना ही भाप फिर दे देता है। इसी तरह पृथ्वी के कोने-कोने में तपस्या, भोग और यज्ञ का महान चक्र बे रोक टोक चलता रहता है।

दूसरा परिच्छेद

एक दिन मैंने अखबार में पढ़ा कि श्याम नगर में कुँवर रघुवीरसिंह जी का राजतिलक ५ जुलाई सन् १८८८ को बड़े समारोह के साथ मनाया जायगा । मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई । मैंने पक्का इरादा कर लिया कि इस शुभ अवसर पर मैं श्याम नगर अवश्य जाऊँगा और राजतिलक देखूँगा । श्याम नगर का नाम सुनते ही मेरा दिल मारे खुशी के उछल पड़ता था, और मेरे हृदय में अद्भुत प्रकार की गुदगुदी होने लगती थी, परन्तु मैंने अपनी भावनाओं को किसी पर प्रकट होने नहीं दिया । मैंने अपनी चाची जी से कहा कि यशवन्त नगर में मुझे नौकरी मिली है और मैं चार जुलाई को यहाँ से रवाना हो जाऊँगा । मैंने सफ़र की तैयारी कर दी ।

चार मार्च को तड़के मैं श्याम नगर को रवाना हुआ।

मैंने अपने दिल में सोचा कि राजतिलक के उत्सव के समय श्याम नगर के होटलों में कहीं जगह न मिलेगी, यदि जगह मिली भी तो अधिक किराया देना पड़ेगा। गाड़ी चार बजे शाम को राज नगर पहुँचती है जो कि श्याम नगर से चार मील की दूरी पर है। मैं राज नगर के किसी होटल में ठहर जाऊँगा। रात भर वहीं आराम करूँगा। सुबह छः बजे की गाड़ी से मैं श्याम नगर को रवाना हूँगा और दिन भर राज तिलक देखकर शाम को फिर राजनगर वापस आ जाऊँगा।

मैंने राजनगर का टिकट लिया। गाड़ी रवाना हुई। मैं शाम को चार बजे राज नगर पहुँचा और अन्नपूर्णा होटल में ठहर गया। होटल में सामान रख कर, कुछ जलपान करने के पश्चात् मैं राज नगर के जङ्गलों की सैर को चल पड़ा। दृश्य बड़ा मनोरंजक था। पानी कुछ बरस कर निकल गया था। हरियाली छाई हुई थी। हर तरफ़ प्रकृति की कारीगरी दिखाई पड़ती थी। रङ्ग बिरङ्ग के फूल अपनी अद्भुत छटा दिखला रहे थे। पृथ्वी बानात की हरी वर्दी पहिने हुए थी। जङ्गलों में मस्त होकर मोर नाचते फिरते थे और पहाड़ों में चकोरों ने शोर मचा रक्खा था। कोयल कू-कू कर रही थी। तालाबों का जल दूध सा सफ़ेद था जिसमें कमल खिले हुए थे। मन्द समीर शान्त वातावरण को कभी-कभी झकझोर देता था। चारों ओर आनन्द ही आनन्द था। ये दृश्य इतने मनोरंजक और चित्ताकर्षक थे कि मैं मस्त हो गया और वृक्ष के नीचे बैठ कर सिगरेट पीने लगा।

दो बड़े वृक्षों की शाखें एक दूसरे से मिली थीं। सूर्य की किरणें छन-छन कर मेरे ऊपर पड़ रही थीं । मेरे कई सिगरेट ख़तम हो गये। मुझे नींद आने लगी । अतः मैं लेट गया और फिर गहरी नींद सो गया । स्वप्न में मैंने देखा कि श्याम नगर का राजमुकुट मेरे सर पर रक्खा जा रहा है और फूल सी कोमल राजकुमारी मेरे बगल में खड़ी है। अमीर, रईस, सेना नायक सभी मुझे मुबारकबादी दे रहे हैं । राज्याभिषेक के अवसर पर जय-जय की ध्वनि सारे वायुमण्डल में गूँज रही है।

तीसरा परिच्छेद

एक कड़ी आवाज़ ने मुझे जगा दिया। मजबूर होकर मुझे अपनी आँखें खोलनी पड़ीं। देखता क्या हूँ कि दो फ़ौजी अफ़सर बन्दूकें लिये मेरे सामने खड़े हैं और घूर-घूर कर मुझे देख रहे हैं। मैं तुरन्त उठ खड़ा हुआ। बड़ी मूछों वाले सिपाही ने अपनी टोपी उतारी और अपने साथी से कहा—'लम्बाई में भी यह कुँवर जी के अनुरूप है।' दूसरे ने कहा—'इसमें और कुँवर जी में रत्ती भर भी अन्तर नहीं है।'

मैंने कहा—'आप लोगों ने मुझे जगा कर मेरे सुन्दर स्वप्न पर पानी फेर दिया! इस समय मैं बैकुंठपुरी में था जहां इन्द्र के सिंहासन पर मेरा राज्याभिषेक हो रहा था और मेनका मेरे बगल में खड़ी कनखियों से प्रेम का निदर्शन कर रही थी।'

बूढ़े सिपाही ने मुस्कराते हुए कहा—'क्षमा कीजियेगा, हम लोग श्याम नगर के महाराजा के सेना के मन्त्री हैं। मेरा नाम दामोदर दास है और इनका नाम प्रभुदयाल। कृपया अपना परिचय दीजिये।'

मैंने कहा—'मैं रामपुर का निवासी हूँ और मेरा नाम राममोहन है। कुँवर जी का राज्याभिषेक देखने लिए यहाँ आया हूँ।'

उसी समय वृक्ष के पीछे से कुँवर जी आ निकले और मेरे सामने खड़े हो गये। ज्योंही उनकी नज़र मेरे ऊपर पड़ी वह चौंक पड़े और आश्चर्य से एक क़दम पीछे हट गये। कुछ देर तक वह मुझे बड़े गौर से देखते रहे। मैं भी अवाक था। वह चिल्ला उठे—'अरे यहाँ तो मेरा जोड़ा आ गया।' वह क़हक़हा मार कर हँस पड़े। उनकी हँसी जङ्गल में गूँज उठी। उन्होंने कहा—'आप कहाँ से आ रहे हैं ?' मैंने कहा—'मैं रामपुर का निवासी और दिलावरसिंह सेना नायक जो कि हुज़ूर के पिता जी के परम विश्वास पात्र थे उनका पुत्र हूँ और हुज़ूर का राजतिलक देखने के लिए यहाँ आया हूँ।'

मेरे पिता का नाम सुनकर वे बड़े प्रसन्न हुए। दामोदर दास और प्रभुदयाल भी फूले न समाये।

कुँवर जी—'भई खूब मिले ! आप तो हमारे भाई निकले। हम लोग एक ही वंश के हैं। आज हम लोग साथ-साथ खायेंगे और खूब पियेंगे। ऐसा समय कम आता है जब दो भाइयों का शुभ मिलन होता है।' ऐसा कह कर वह मुझसे लिपट गये। फिर हम लोग खुशी-खुशी शिकारगाह को रवाना हुए।

थोड़ी दूर चलने के पश्चात् हम लोग एक तालाब के किनारे पहुँचे। कुछ दूरी पर एक छोटे से महल की सफ़ेदी दिखाई दी। यह महल तालाब के बीच में बना था। वहाँ से इस जङ्गल की बहार दृष्टिगोचर होती थी। बीच में दूध सा सफ़ेद रास्ता था जिससे होकर हम लोगों ने उस मकान में प्रवेश किया। इस मकान के चारों कोनों में कमरे थे। बीच में एक बड़ा कमरा था जो बैठक का काम देता था। अनेक कुरसियाँ और आराम कुरसियाँ बरामदे में रक्खी हुई थीं। गुलदस्तों में खूबसूरत और सुगन्धित फूल बड़ी खूबसूरती से सजाये हुए रक्खे थे जिनकी भीनी-भीनी सुगन्ध चारों तरफ़ फैली थी।

हम लोग आरामकुरसी पर बैठ सिगरेट के धुएँ को उड़ा कर दिन भर की थकावट को दूर कर रहे थे कि लौटन ने आकर सूचना दी कि भोजन तैयार है। हम सब लोग उठ खड़े हुए। आगे· आगे कुँवर जी, उनके पीछे मैं और फिर प्रभुदयाल, दामोदर दास और अन्य लोग। गोल मेज़ पर सिल्क का दूध सा सफ़ेद चद्दर बिछा था। मैंने कमरे के चारों तरफ़ दृष्टि डाली। यह कमरा बैठक से शान में कहीं अधिक था। सङ्गमरमर की दीवालें थीं जिनकी छतों पर स्थान-स्थान पर रङ्ग बिरङ्गे चमकते हुए पत्थर जड़े थे। बीच-बीच में शमादान शीशे के चाँदी की ज़ंजीरों से लटक रहे थे। चारों तरफ़ गद्देदार कुरसियाँ और स्थान-स्थान पर आराम कुरसियाँ भी थीं। कुँवर जी की कुरसी चाँदी की थी जिसमें मखमली गद्दे लगे हुए थे। सङ्ग मूसा की छोटी-छोटी कई गोल मेज़े थीं जिनमें दूर-दूर देश के फल फलारी चाँदी की तश्तरियों में बड़े

क़रीने से सजे थे। उनमें नागपुर केर शन्तरे, काश्मीर के सेब, कन्दहार के अनार और टिउनिस के खजूर थे।

खाना मेज़ पर बड़े क़ायदे से चुना गया। मेज़ पर तश्तरियों की भरमार थी। किसी में कोरमा, किसी में शीरनी, किसी में कबाब इत्यादि चुने थे जिनकी खुशबू से मेरे मुँह में पानी भर आया। शराब की रङ्गीन बोतलें शोभा में चार चाँद लगा रही थीं। कुँवर जी ने खाना बहुत थोड़ा खाया। वह केवल साथ देते रहे परन्तु मैंने और अन्य साथियों ने तो खूब लम्बे-लम्बे हाथ मारे। कुँवर जी ने मेरी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा—'भाई साहब, प्रतिज्ञा करो कि आखीर तक आपको मेरा साथ देना पड़ेगा।' मैंने उनको विश्वास दिलाया कि चाहे जान चली जाय परन्तु आपका साथ कभी न छोड़ूँगा।

कुँवर जी ने बड़े चाव से एक शराब का प्याला मेरे आगे बढ़ा दिया।

मैंने कहा—कुँवर जी, यह कौन सी चीज़ है ?

कुँवर जी—भाई साहब, यह अमृत है।

वह अमृत, जो समुद्र के मथने पर निकला था और जिसको स्वयं विष्णु जी ने देवताओं को पिलाया था। या यों कहिए कि यह वह अंगूर का रस है जिसकी जड़ें मेरा अनुमान है युग युगान्तर तक अमृत जल से सींची गई होंगी, तब यह शराब या यों कहिये सोम रस बना है। वरना कहाँ हम और कहाँ यह सोमरस। भाई साहब, इसको पीने से हृदय गद्गद हो उठता है। इसको पीकर यदि धन की कामना करो तो पीरू, गुजरात, गोलकुंडा इत्यादि की सोने की कानें तुम्हें दृष्टि-

गोचर होने लगेंगी। कारू के खज़ाने के द्वार खुल जायँगे। जी चाहे जितना धन लो, उड़ाओ, मौज करो। यदि तुम कवि या लेखक हो, इसको पी लो। हृदय विशाल हो जायगा। मस्तिष्क स्वतन्त्रता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जायगा जहाँ उच्च विचार धारा के लम्बे-लम्बे पर मिलेंगे जिससे वायुमण्डल में स्वतन्त्र रूप से जहाँ चाहोगे विचरोगे। कोई रुकावट न होगी। कोई बात असम्भव प्रतीत न होगी। यदि पृथ्वी में ऐश्वर्य का सर्वोच्च स्थान प्राप्त करना चाहते हो, इसे पान करो। केवल एक ही घण्टे के पश्चात् तुम महाराजाधिराज हो जाओगे। ऐशिया, योरुप, अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, जैसे-जैसे छोटे प्रदेशों के नहीं परन्तु समस्त वायुमण्डल के लोक लोकान्तरों के महाराजाधिराज हो जाओगे। यदि स्त्री की कामना करो, इसे पी लो। आध ही घंटे में इन्द्र के दरबार की परियाँ चन्द्रवदनी, मृगशावकनयनी जो अपनी शोभा में रति का मान मर्दन करने वाली हैं, रङ्ग बिरङ्गी साड़ियों और उम्दा गहनों को पहिने हुए कोकिल को मात करती हुई सुन्दर गीत गाती हुई तुम्हारी आरती उतारती हुई दिखलाई पड़ेंगी। ऐसा कह कर कुंवर जी एक प्याला शराब पी गए और कहने लगे—भाई साहब, इस सोमरस को पीने में आपको हिचक न होनी चाहिए।

खाना खाने के पश्चात् हम लोग दूसरे कमरे में आए। दीवाल और छतों में उम्दा-उम्दा खाल बड़ी सफ़ाई से लगी थीं। अटलस के शेर की खाल, बङ्गाल के चीतों और तेंदुओं की चितकबरी सुन्दर रङ्ग बिरङ्गी खाल, साइबेरिया के भालू और नारवे की लोमड़ियों की मुलायम खाल

बहुत सुन्दर प्रतीत होती थी । खाने के पश्चात् फ़रशियाँ हमारे सामने आईं । अपने-अपने बिस्तरों पर बैठे हम लोग फ़रशी पीने और गप्प-शप्प करने लगे।

आध घण्टे के पश्चात् कल्लू एक शराब की बोतल लिये हुए कुँवर जी के पास आया और झुक कर बड़े अदब के साथ नमस्कार किया। फिर एक शराब की बोतल मेज़ पर रख दी और कहा—'हुज़ूर, आपके भाई साहब कुँवर निरंजन सिंह ने आपकी सेवा में अपने प्रेम के निदर्शन स्वरूप इसे भेजी है और कहा है कि जब हुजूर की तबियत अन्य शराबों से भर जाय तब इसे पीकर अपना जी बहलावें । इसको कुँवर जी ने विलायत मे मँगवाया है।

कुँवर जी—वाह रे निरंजन, तूने खूब किया! मेरे लिए विलायत से शराब मँगवाने का कष्ट किया । भाई हो तो ऐसा ! बोतल का काग अलग करो। ज्योंही कुंवर जी ने शराब चक्खी, वह चिल्ला उठे—'भई कितनी लज्ज़तदार शराब है यह ! क्षमा कीजियेगा। भाई साहब, मेरा राज पाट सब ले जाइये परन्तु इस शराब की एक बूँद भी मुझसे न माँगिये । यह शराब मैं अपने भाई निरंजन के प्रेम की बधाई देकर पीता हूँ।' ऐसा कह कर वह कुल शराब पी गये । थोड़ी देर के बाद बोले—'भाई साहब, इस शराब ने दिन भर की थकावट दूर कर दी और बदन को फूल के समान हलका कर दिया है। परेशानी का पता नहीं और हृदय में बड़ा आनन्द आ रहा है । भाई साहब, देखो इन्द्र लोक सामने आ गया जहाँ मेनका अपनी सहेलियों के साथ सुन्दर अति

सुन्दर वस्त्र पहिने नाच रही है, गा रही है जिसके काले-काले बाल नाग सदृश समुद्र की लहरों की तरह उसके गालों के चारों तरफ़ लहरा रहे हैं। ऐसा विदित होता है मानो विष से त्रस्त होकर काले-काले नाग उसके मुख रूपी चन्द्रमा से अमृत छीनने का प्रयास कर रहे हैं।'

नृत्य कला का अद्भुत चमत्कार दिखला रही है वह। अरे वह आ रही है मेरी तरफ़, प्यार भरी दृष्टि से मेरी तरफ़ देख रही है। उसकी आँखों की पुतलियाँ सफ़ेद कमल के फूल में काले भँवरे की तरह नाच रही हैं। फिर नींद ने अपना अंकुश डाल दिया और कुँवर जी गहरी नींद मे सो गये।

चौथा परिच्छेद

दो बजे का समय रहा होगा कि मैं एकाएक जग उठा। दामोदर दास का चेहरा उतरा हुआ था और वह बहुत घबराये हुए मालूम होते थे। प्रभुदयाल का चेहरा पीला पड़ गया था। उनकी आँखों से गोया आग बरस रही थी और वह निरंजन को कोस रहे थे। मैंने कहा—'भाई, माजरा क्या है?' दामोदर दास ने कुँवर जी की ओर संकेत करके कहा—'देखो इनकी क्या दशा हो रही है।' कुंवर जी बेहोश पड़े थे और वह ज़ोर-ज़ोर से लम्बी-लम्बी साँस ले रहे थे। मैंने उनकी नाड़ी टटोली। नाड़ी बहुत मद्धिम चल रही थी जिससे भय का अन्देशा मालूम होता था।

मैंने कहा—आखिर वाली शराब में बेहोशी की कोई दवा तो नहीं मिली थी?

दामोदर दास—बहुत सम्भव है।

मैंने कहा—हमें डाक्टर को बुलाना चाहिए।

प्रभुदयाल—दो मील पर एक डाक्टर रहता है परन्तु वह अव्वल नम्बर का शराबी है। वह भी इसी तरह शराब में चूर होगा। भला शराबी डाक्टर क्या इलाज कर सकता है?

मैंने कहा—डाक्टर न होने से शराबी डाक्टर ही अच्छा है। प्रभुदयाल को तो कुँवर जी के पास छोड़ा और मैं और दामोदर दास डाक्टर हुलास राय के मकान को रवाना हुए। जब हम लोग पहुँचे तो देखते क्या हैं कि वहाँ अजीब रङ्ग है। शराब के दौर चल रहे हैं। कहीं तो कोई मस्त हो कर नाचता है और कहीं कोई गाता है। जिस तरफ़ देखो मस्ती ही मस्ती छाई हुई है। डाक्टर हुलास राय नशे में चूर, कभी नाचते हैं और कभी गा-गा कर कह रहे हैं—

वह सौ-सौ बल खायँ मेरी बला से।

डाक्टर साहब हाथ में शराब का प्याला लिये हुए थे। प्याला छलका जाता था। आँखों के सामने अँधेरा छाया हुआ था। कान सुन्न था। कहते थे कुछ, निकलता था कुछ, पैर रखते थे कहीं, पड़ता था कहीं।

दामोदर दास—देखा डाक्टर साहब का रङ्ग, भला यह डाक्टर क्या इलाज कर सकते हैं?

मैंने कहा—इनसे कहो तो सही। मसल है 'अन्धों में काना राजा।'

दामोदर दास—डाक्टर साहब, कुँवर जी बहुत सख्त बीमार हैं। जल्दी चलिए और उनका इलाज कीजिए। वह क़रीब के शिकारगाह में हैं।

डाक्टर साहब ने जब कुँवर जी की बीमारी का हाल सुना, फ़ौरन् उनका नशा काफ़ूर हो गया। कहने लगे—कुंवर जी बीमार हों और यहाँ शराब के दौरे चलें। ऐसा कभी नहीं हो सकता। फ़ौरन उन्होंने हुक्म दिया कि गाड़ी तैयार हो और दम के दम में दवा का बक्स निकाल कुंवर जी के इलाज के लिये रवाना हुए। कुँवर जी की नब्ज़ टटोल कर डाक्टर साहब कहने लगे। इनकी नाड़ी बहुत धीमी चल रही है। मालूम होता है शराब के साथ बेहोशी की दवा मिला दी गई है। मौत का भय नहीं है, परन्तु दो दिन तक कुँवर जी का उठना असम्भव है।

दामोदर दास—निस्सन्देह निरंजन ने बेहोशी की दवा मिला कर शराब भेजी होगी।

दामोदर दास—आज सुबह यदि कुंवर जी श्याम नगर न पहुँचे तो निरंजन का अवश्य राजतिलक हो जायगा और कुँवर जी हाथ मलते रह जायँगे। जनता शराबी राजा को कदापि गद्दी पर न बैठने देगी।

डाक्टर साहब—(थोड़ी देर सोचने के बाद) मेरा नुस्खा तैयार हो गया।

हम लोग बड़े गौर से डाक्टर साहब की तरफ़ देखने लगे।

डाक्टर साहब मुझको पकड़ कर कहने लगे—इनकी दाढ़ी मूँड़ो और कल सुबह इनका राजतिलक करके निरंजन का मुँह काला करो।

यह तदबीर हम लोगों की समझ में आ गई। सुबह मेरी हजामत हुई। मुझे राजसी कपड़ा पहनाया गया। मैं और मेरे सिपाही श्याम नगर को रेल गाड़ी से रवाना हुए। कुँवर जी के कमरे में ताला लगा दिया गया। एक नौकर उनकी रक्षा के लिए छोड़ दिया। यह राय ठहरी कि राजतिलक होने के पश्चात् सन्ध्या के समय हम लोग कुँवर जी को श्याम नगर ले चलेंगे।

हम लोग स्टेशन पर पहुँच गये। स्पेशल गाड़ी खड़ी थी। हम लोग उसमें बैठ गये। दामोदर दास ने मुझे सिखाना-पढ़ाना शुरू किया। उन्होंने मुझे मुख्य-मुख्य अफ़सरों के नाम बताये और समझाया कि मुझको उनसे किस-किस तरह मिलना चाहिए और किस तरह उनसे बातें करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मैं हमेशा तुम्हारी बगल में रहूँगा। इसी तरह बातें करते-करते हम लोग श्याम नगर की हद में दाखिल हुए। रेल की खिड़की के अन्दर से मैं श्याम नगर की बुरजों और हवेलियों को देखने लगा। क्या ही सुन्दर नगर था! गाड़ी रुक गई। उस वक्त मेरी नब्ज बहुत तेज़ चल रही थी क्योंकि मैं घबरा रहा था। मैंने ईश्वर से प्रार्थना की हे ईश्वर, जो खेल मैं खेलने जा रहा हूँ उसमें मेरी सहायता कर। मैं श्याम नगर के स्टेशन पर उतरा। स्टेशन फूल और मालाओं से खूब सजा हुआ था।

पाँचवाँ परिच्छेद

स्टेशन पर अफ़सरों और धनी पुरुषों का एक समूह मेरी प्रतीक्षा में खड़ा था। सबके आगे प्रधान सेना नायक मोहन मुरारी तमगों से लदे हुए खड़े थे, जिनके चेहरे से फ़ौजी शान टपकती थी।

दामोदर दास ने मेरे कान में कहा—'मोहन मुरारी !' मैं तुरन्त समझ गया कि मैं इस समय श्याम नगर के प्रधान सेना नायक के सामने हूँ।

सेना नायक ने कुछ स्वामि-भक्ति भरे शब्दों से मेरा अभिवादन किया और सूचना दी कि यकायक कुंवर निरंजन सिंह की तबियत कुछ खराब हो गई है, इस कारण वह इस समय स्टेशन नहीं आ सके। मैं बड़े प्रेम से प्रधान सेना नायक से मिला। फिर बहुत से अफ़सर मुझसे मिले और

अपने रुतबे के अनुसार सब ने मेरा अभिवादन किया । इसके बाद नगर के अन्य रईस, अमीर और प्रतिष्ठित लोग मुझसे मिले और सबने मुझे बधाई दी । किसी व्यक्ति ने ज़रा भी सन्देह प्रदर्शन नहीं किया । मेरे दिल की जबरदस्त धड़कन बन्द हो गई और मैं वास्तव में अपने को श्याम नगर का महाराजाधिराज समझने लगा । फिर एक जलूस तैयार हुआ ।

अग्रभाग में अश्वारोहियों की एक सेना थी जिनके शरीर पर सैनिक वस्त्र सुशोभित थे । तमगे उनके उभरे हुए सीनों में चार चाँद लगा रहे थे । अफ़सरों ने अपने सुदृढ़ शरीर को शस्त्रों से सुसज्जित कर रखा था । सब का नेतृत्व कर रहा था मैं जो कि अपने चञ्चल अश्व पर अनोखी छटा से बैठा था । एक हाथ में भाला था, कटि में कृपाण थी । सारे शरीर से वीरत्व फूट निकला था । अरुण अधरों में हल्की सी मुस्कराहट थी और नेत्रों की कान्ति प्रभुत्व स्थापन करने का संवाद देती थी । आगे आगे अश्वारोहियों की एक सेना थी, उसके पीछे पैदल सेना चल रही थी । बैंड और अनेक प्रकार के बाजे बज रहे थे । सबसे पीछे समुद्र की भाँति उमड़ता हुआ मानव दल था जिसमें शहर के अमीर, गरीब, रईस और सभी लोग शामिल थे ।

फिर हमने श्याम नगर में प्रवेश किया ।

क्या ही सुन्दर नगर बसा था ! अधिकतर मकान फूलों से सजे हुए थे । झण्डे और झण्डियों ने शान को बढ़ा दिया था । झरोखों, कोठों और बारजों पर सुन्दर वस्त्र पहिने हुए स्त्रियाँ बैठी थीं, जो कि खुश हो

होकर मेरे ऊपर फूलों की वर्षा कर रही थीं। उस समय ऐसा विदित होता था मानो फ़ूलों की एक ज़बरदस्त बाढ़ आ गई है। एक सुर्ख फूल मेरे घोड़े के अयाल में आकर फँस गया, जिसको मैंने अपने कोट में लगा लिया। प्रधान सेना नायक मुस्कराने लगे।

मैं आनन्द में मग्न था। मारे ख़ुशी के मैंने छज्जों और बारजों पर अपनी दृष्टि डाली। एक से एक हसीन परी जमाल को देखकर मैं मुग्ध हो गया। उनकी ज़र्क़ बर्क़ पोशाक और सुन्दर जेवरातों के नग और मीने चमक रहे थे। कुछ के मुँह पर पाउडर का हल्का सा लेप था और होंठों और नाख़ूनों पर सुर्ख पालिश थी। कुछ के काले-काले समुद्र की लहर की तरह लहराते हुए घुँघराले बाल थे। कुछ तो खिले हुए फूल की तरह थीं जिनका चन्द्र मुख खुले आकाश में हँस रहा था, खेल रहा था, मुस्करा रहा था, अठखेलियाँ कर रहा था। नवयुवतियों में, शोखी व शरारत और चुलबुलापन अजीब रङ्ग ला रहा था। मुझे ऐसा विदित हुआ कि मैं इन्द्र की अप्सराओं के मध्य में हूँ जिन पर कामदेव की रति की छाया पड़ रही है।

कुछ देर के पश्चात् सेना नायक ने अपना हाथ हिलाया। क्षण भर में मेरी रक्षा करने वाले वीर सिपाही मेरे गिर्द बिल्कुल घेर कर खड़े हो गये, ताकि और लोग मेरे निकट न आ सकें। दामोदर दास ने कहा—'अब हम कुँवर निरंजन सिंह के इलाके में आ गये। हमें सावधान हो जाना चाहिए। हम आगे बढ़े। इस नगर की सड़कें अधिक सजी नहीं थीं। इनमें किसी-किसी मकान पर कुँवर निरंजन सिंह का चित्र टँगा था'

जिससे मालूम हो गया कि वह लोग मुझे ज्यादा नहीं चाहते थे। अधिकतर लोगों ने मेरा स्वागत किया, फूल बरसाये परन्तु कुछ लोग चुपचाप रहे। हम लोग घूम घाम कर राज महल में पहुँचे जहाँ पर जन-समूह हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। रईस, अमीर और सेना के बड़े-बड़े अफ़सर अपने-अपने रुतबे के अनुसार जड़ाऊ कुरसियों पर बैठ गये।

उसी जगह बड़ी ऊँचाई पर तख्त रक्खा हुआ था जो कि शान में शाहजहाँ के तख्त ताऊस से कम न था। तख्त सोने का बना था जिसमें जगह-जगह पर लाल, मोती, हीरे और जवाहिरात बड़ी सुन्दरता से जड़े थे। तख्त में मोर का चित्र अति सुन्दर बना था जो कि अपनी ही शान रखता था।

दरबार की बारहदरी की शोभा वर्णन नहीं की जा सकती। छत में सुनहरी बेल और बीच-बीच में जड़ाऊ फूल और ही रङ्ग ला रहे थे। छत से लटकती हुई बिल्लोरी हाँड़ियों की परिड़यों में मानिक की लोलकें लटक रही थीं, जड़ाऊ डोरों पर बेश कीमती दीवारगीरों को देख कर अक्ल दङ्ग रह जाती थी। दरवाज़ों की मेहराबों पर अँगूर की बेलें और उस पर बैठी हुई सुन्दर चिड़ियों के समूह ने शान को बढ़ा दिया था।

उन अँगूरों में कहीं-कहीं पक्के अँगूर की जगह मानिक और कच्चे की जगह पन्ना काम में लाया गया था।

बाहर शहनाई बज रही थी। महल फूल और मालाओं से सजा था। राजमहल की सुन्दरियाँ नाच रही थीं, गा रही थीं, उनके पायल

के रुन झुन ने एक मधुर तान छेड़ दी थी। नर्तन करते समय ऐसा विदित होता था मानों इन्द्र पुरी की अप्सराओं ने इन्द्र पुरी को छोड़ कर श्याम नगर में अपना डेरा डाल दिया है। रङ्ग विरंगे फूल उठ-उठ कर सुन्दर बालाओं की आँचल में अपना मुँह छिपाने का प्रयत्न कर रहे थे।

दरबार के सभी पदाधिकारी अपने-अपने स्थान पर बैठे थे। पुरोहित सुवर्ण थाल में आरती पुष्प इत्यादि लिये हुए खड़े थे। शङ्ख की ध्वनि हुई। सब दरबारी खड़े हो गये। प्रधान सेना नायक मोहन मुरारी की सुपुत्री राज कुमारी किशोरी देवी, जिससे कुँवर जी की सगाई हुई थी, एक सुर्ख रङ्ग की साड़ी पहिने हुए मेरे बगल में खड़ी थी। उसके अधरों पर हल्की सी मुस्कराहट खेल रही थी। उसका वर्ण उज्ज्वल था। वह लम्बी और पतली थी। उसके केश काले थे और आँखों की पुतलियाँ ऐसी मालूम होती थीं कि सफ़ेद कमल के फूल में भँवरा नाच रहा है। उसके दाँत मुक्ता के सदृश्य थे। वह बनारसी साड़ी पहिने थी जिसमें अद्भुत प्रकार की सुर्ख़ी की झलक थी। उसके आलौकिक रूप की छटा चारों ओर बिखर गई जिसे देख कर मैं मुग्ध हो गया।

पुरोहित ने लाल और जवाहिरातों से जड़ा हुआ सोने का ताज मेरे सर पर रक्खा और राज दण्ड मुझे दिया। मैंने शपथ खाई कि मैं अपनी प्रजा को अपनी सन्तान के बराबर समझूँगा। उनकी रक्षा करना, उनको सुख पहुँचाना अपना प्रधान कर्तव्य समझूँगा। उनके सुख में अपना सुख और उनके दुःख से अपना दुःख समझूँगा। फिर शङ्ख की ध्वनि हुई और एक घोर शब्द हुआ—'ईश्वर हमारे

महाराज को सुरक्षित रक्खे।' इसके पश्चात् मैं राजसी तख़्त पर बैठा। उस वक्त का क्या कहना था! मैं मग्न था। मेरा दिल ख़ुशी से फूला न समाता था। वास्तव में मैं अपने को उस समय महाराजा समझने लगा था। थोड़ी देर के पश्चात् निरंजन सिंह भी उपस्थित हुए। उनका चेहरा पीला पड़ गया था। आँखें गुस्से से लाल हो रही थीं परन्तु वह अपने गुस्से को दबाये थे। निरंजन सिंह ने मुझे झुक कर नमस्कार किया। मैं उनसे बड़े प्रेम से मिला और उन्हें सीने से लगाया। थोड़ी देर तक वह भँव चढ़ाये बैठे रहे। इसके बाद वह चले गये। दामोदर दास उनको देख-देख कर मुस्करा रहे थे और मेरे चेहरे पर भी हँसी की झलक थी। परन्तु न राजकुमारी और न किसी व्यक्ति को कुछ भी सन्देह हुआ। मैं इतना थक गया मानो उम्र भर मैं महाराजा रह चुका हूँ। दूर-दूर देश के राजों और महाराजों ने तुहफ़े भेजे थे। राजदूतों ने बड़े नम्र भाव से मुझे नमस्कार किया और मेरी हुज़ूर में तुहफ़े पेश किए। मैं भी उन लोगों से उचित तरह से मिला। सभा विसर्जित हुई। राज दरबारी अपने-अपने घर को गये। राजकुमारी अपने महल में गई और मैं भी अपने महल में गया। उस रोज़ रात भर सारे शहर में खुशियाँ मनाई गईं। लोगों ने नाच गा कर रात व्यतीत की। जिधर देखो गाने ही की आवाज़ आती थी। हर तरफ़ आनन्द बधाई बज रही थी। मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया—'ईश्वर जो काम मेरे सुपुर्द हुआ था वह बड़े अच्छे ढङ्ग से अदा हुआ।'

छठवाँ परिच्छेद

दामोदर दास—शाबाश, आपने आज कमाल कर दिया और हम लोगों की मान और मर्यादा रख ली। यदि आप न होते तो कमबख्त निरंजन सिंह हम लोगों की आँखों में धूल झोककर आज तख्त पर बैठता क्योंकि प्रजा शराबी राजा को कभी न पसन्द करती।

'अजी, मैंने क्या किया। इस सब का सेहरा डाक्टर हुलास राय के सर है क्योंकि यदि वह नुस्खा न तैयार करते तो हम लोग कुछ भी नहीं न कर सकते।'

हम लोगों ने खाना खाने के पश्चात् अपना भेष बदला। मैंने अपना चेहरा साफ़े से ढक लिया ताकि कोई मुझे पहचान न सके। और क़रीब दस बजे रात घोड़े पर सवार होकर चोर रास्ते से राज नगर के शिकार

गाह को, जहाँ कुँवर जी को हमने छोड़ा था, रवाना हुए। प्रभुदयाल को महल में छोड़ दिया और कहा कि यदि कोई महाराजा साहब से मिलना चाहे तो कह देना कि वह गहरी नींद में सो रहे हैं और सात बजे सुबह से पहिले नहीं मिल सकते।

रात अँधेरी थी। जङ्गल साँय-साँय कर रहा था। हवा सर्द बह रही थी और हम लोग घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए चले जा रहे थे कि यकायक दामोदर दास ने मेरी लगाम खींची। हम लोग खड़े हो गये।

दामोदर दास—मुझे ऐसा ज्ञात हो रहा है कि हमारे पीछे कुछ सवार आ रहे हैं। मैंने भी ध्यान देकर सुना। हमें घोड़ों की टापें सुनाई दीं। हम झटपट घोड़ों से उतरे और पेड़ों की आड़ में छिप गये। आवाज़ धीरे-धीरे बढ़ती गई और अन्त में हमने सवारों को जाते हुए देखा। वह निरंजन और उसके साथी थे।

वह ठहर गये और कुछ सोचने लगे।

निरंजन—मुझे मालूम होता है कि मैंने कुछ घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनी है।

राधे मोहन—हवा तेज़ी से बह रही है, इसी कारण आपको घोड़े की टापों की आवाज़ मालूम हुई। यह केवल आपका भ्रम है।

ऐसा कह कर वह राज नगर की तरफ़ चल दिये। जब वह काफी दूर निकल गये तब हम लोग पेड़ों की आड़ से निकले।

दामोदर दास—मुझे भय होता है कि कुँवर जी पर कोई आफत

अवश्य आई है । इन लोगों ने उन्हें कोई हानि तो नहीं पहुँचाई ।

हम लोग चलते रहे । फ़िक्र हमारे सर पर सवार थी । आध घण्टे में हम लोग शिकारगाह पहुँच गये । शिकारगाह में सन्नाटा छाया हुआ था । न वहाँ कोई आदमी और न कोई नौकर-चाकर । हम लोगों ने टार्च जलाया और दीवान ख़ास में गये जहाँ हमने कुँवर जी को सोता छोड़ा था । ताला टूटा था और दरवाज़ा खुला था । एक लाश हमारे पैरों से लगी और हमने एक आदमी को मरा हुआ पाया । हम चौंक पड़े ।

दामोदर दास—(चिल्लाकर) अरे यही तो हमारे कुँवर जी हैं । पापी निरंजन ने इन्हें मार डाला । ऐसा कह कर वह फफक-फफक कर रोने लगे ।

मैं भी घबरा गया । मैंने धीरज धर कर टार्च जलाई और मरे हुए आदमी का चेहरा देखा । मैं चिल्ला उठा—दामोदर, यह कुँवर जी नहीं हैं । यह उनका नौकर है जिसको हमने उनकी रक्षा के हेतु छोड़ा था । फिर हमने महल का कोना-कोना छान डाला परन्तु कुँवर जी का कहीं पता नहीं चला । हमने समझ लिया कि निरंजन सिंह ने उन्हें अवश्य क़ैद कर लिया है ।

दामोदर दास—ईश्वर ने तुम्हें रामपुर से श्याम नगर को भेजा है । अब तुम श्याम नगर में राज करो जब तक कि महाराजा साहब निरंजन सिंह के क़ैद से छूट न जायँ । यहाँ अधिक ठहरना ठीक नही है । निरंजन सिंह के आदमी कहीं आ न जायँ ।

मैंने कहा—इस नौकर ने हमारे महाराजा की सेवा में अपनी जान को निछावर किया है। आओ इसको करीब की नदी में डाल दें।

हम लोगों ने लाश को उठा कर नदी में डाल दिया और रवाना होने ही को थे कि दस-बारह आदमी भाला बरछी और तलवारें लिये हुए आते दिखाई पड़े। हम शिकारगाह के बाहर निकलकर एक घने पेड़ की आड़ में छिप गए और अपने घोड़ों को भी वहीं छिपा दिया। वह लोग हमारे पास से करीब-करीब गुज़र ही चुके थे कि मेरा घोड़ा हिनहिनाया। अब तो वह चौकन्ने हुए। आश्चर्य से वह इधर उधर देखने लगे। उन लोगों ने हमें देख लिया और फिर हम पर टूट पड़े। हमने भी पिस्तौलें सँभालीं और धड़ाधड़ गोलियाँ चलाने लगे। कुछ ही मिनटों में हमने पाँच आदमियों को साफ कर दिया। गोली के आगे कहीं तलवार चल सकती है? यह निरंजन के आदमी थे जो कि शिकारगाह में हम लोगों को पकड़ने के उद्देश्य से आये थे। मौका पाकर हम लोग घोड़ों पर चढ़ कर नौ दो ग्यारह हो गए। परन्तु वह साहसी और स्वामिभक्त पुरुष थे। उन्होंने हमारा पीछा किया, परन्तु हमको पकड़ न सके क्योंकि हमारे घोड़े हवा से बातें करते थे। किसी ने मेरा लक्ष्य करके एक छुरी फेंकी जिससे मेरी दाहिनी अँगुली में चोट लग गई और खून बहने लगा। मौका पाकर मैंने अपनी अँगुली को रुमाल से बाँध लिया। कुछ देर में खून का निकलना बन्द हो गया। सुबह होते-होते हम लोग राज महल में चोर दरवाज़े से पहुँच गये।

प्रभुदयाल पहरा दे रहा था। मैंने कहा—देखें भाग्य कब तक यह खेल खिलाता है।

दामोदर दास—कोई आदमी मिलने को तो नहीं आया?

प्रभुदयाल—जी नहीं। परन्तु महाराजा साहब कहाँ हैं?

दामोदर दास—चुप रहो। अभी इसका रहस्य बताता हूँ।

फिर दामोदर दास ने मेरी अँगुली को धोकर दवा लगाई। मैंने अपने सोने के कपड़े पहिन लिये और बिस्तर पर लेट गया।

सुबह होते ही अख़बारों में निकल गया कि महाराजाधिराज रात भर गहरी नींद सोये।

दामोदर दास ने मुझे सिखाया कि मेरा फ़र्ज़ क्या है और मुझे लोगों से कैसे मिलना चाहिए। फिर बतलाया कि कुँवर जी तीन घण्टे के बाद शराब पीते थे और उन्हें मसालेदार चीज़ें बहुत पसन्द थीं। मैंने अपना जीवन वैसा ही बना लिया जैसा कुँवर जी का था। अँगुली में चोट लगने से मुझे बड़ा फायदा हुआ क्योंकि मैं लिखने के ख़तरे से बच गया। इसी तरह पन्द्रह रोज़ व्यतीत हो गए।

प्रभुदयाल—हम अपना समय बेकार व्यतीत कर रहे हैं। हमको तुरन्त निरंजन सिंह पर आक्रमण करके कुँवर जी को छुड़ाना चाहिए।

दामोदर दास—हम ऐसा नहीं कर सकते। क्योंकि बिला कोई कारण दिखलाये निरंजन के किले की तलाशी लेने में बड़ी बदनामी होगी। यदि लड़ाई खुल्लमखुल्ला छिड़ जाय तो कोई बात नहीं, वरना

हमें ऐसा काम न करना चाहिए जिससे प्रजा असन्तुष्ट हो जाय । इस वास्ते चुपके-चुपके काम करने की आवश्यकता है ।

प्रभुदयाल—क्या निरंजन महाराज को मार डालेगा ?

दामोदर दास—वह ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि महाराजा के मार डालने से निरंजन का कोई मतलब हल न होगा । वह कुछ दिन तक उसे गिरफ्तार रक्खेगा, फिर देखा जायगा । मैं इस बात की प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि उसी की तरफ से कार्यवाही शुरू हो ।

सातवाँ परिच्छेद

घोड़े पर सवार होकर एक दिन मैं राजकुमारी के महल की तरफ़ से गुज़रा । छत पर राजकुमारी गमलों के फूल की शोभा को निरख रही थी । यौवन उसके शरीर से मचल रहा था । बचपन एक चित्ताकर्षक सौंदर्य छोड़ता हुआ जवानी में लीन हो रहा था । उसके लच्छेदार केश नागिन की भाँति उसकी पीठ से लहरा रहे थे जिससे पवन अठखेलियाँ कर रहा था । और उसके सुवास से वायुमण्डल में मादकता की लहर बखेर रहा था । मैंने घोड़े को रोक दिया और राजकुमारी की तरफ़ ध्यान पूर्वक देखने लगा । संयोगवश राजकुमारी ने मुझे नहीं देखा अतः मैं उसके रूप-लावण्य की अनुपम छटा निरख-निरख मस्त हो रहा था । कितनी सुन्दर थी वह ! ओह ! यदि वास्तव में मैं महाराजा होता तो सौंदर्य की सम्राज्ञी

किशोरी देवी के प्राकृतिक सौंदर्य की बहारजी खोलकर लूटता । मेरे हृदय में प्रेम की एक ज्वाला उत्पन्न हुई परन्तु प्रेम की कोख से उत्पन्न होने वाली कोमल कलिका को कर्तव्य की भावना ने एक दम भस्म कर दिया । मेरी प्रवृत्ति एक दम बदल गई । मेरा हृदय धिक्कार उठा, हृदय से पुकार उठी—'अफसोस! क्या एक सुन्दर रमणी को देखते ही तुम अपना कर्तव्य भूल गए?' एकाएक किशोरी देवी की दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी । आँखें आँखों से मिल गईं । मुझे पहिचान कर वह एक दम चौंक पड़ी । कैसे खड़ी रही मैं महाराजा के सामने । उसके कपोल आरक्त हो उठे । उसने स्त्री सुलभ लज्जा का अनुभव किया । उसने दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया और संकेत द्वारा मुझे अपने महल में बुलाया । मुझे जाते हुए बड़ी हिचक मालूम हो रही थी । मेरे दिल में चोर बैठा था । मैं डर रहा था कि कहीं मैं प्रेम में फिसल न पड़ूँ परन्तु राजकुमारी की बात टालना भी उचित न था । यह सोचकर मैंने महल में प्रवेश किया । राजकुमारी अपनी दासियों के साथ जो कि परियों के सदृश नवयुवतियाँ थीं, सुवर्ण के थाल में आरती लिये हुए मेरे स्वागत के लिए आई । आरती के पश्चात् उसने गजमुक्ता का हार मेरे गले में डाल दिया । फिर हम सब ने गाने के कमरे में प्रवेश किया । मैं राजकुमारी के बगल में एक चाँदी के तख्त पर बैठ गया । नवयुवतियाँ कभी खाली साज़ बजातीं, कभी बाँसुरी की आवाज़ से अपनी आवाज़ें मिलातीं और कभी सितार पर हाथ फेर देतीं । फिर सारङ्गी और तबले की बारी आई । तबले की ठङ्कार से कमरा गूँज उठा । फिर राजकुमारी ने स्वयं वीणा ले ली और एक सुरीली आवाज़ में एक तान छेड़ दी ।

उसका गाना एक प्रेमिका का था जो कि अपने प्रेमी के प्रेम में विह्वल हो उठी थी। उसके गाने से मेरे हृदय में दर्द पैदा हो गया। उसके हर एक भाव पर मेरा दिल फड़क उठता और मैं बेसुध हो जाता। उसका गाना समाप्त होते ही हम लोग एक दूसरे कमरे में गए। इस कमरे में एक सङ्गमरमर की गोल मेज़ थी जिसमें चारों तरफ़ गद्देदार कुरसियाँ, आराम कुरसियाँ, कोच और अन्य सामान बड़े क़रीने से रक्खे हुए थे। दीवालों में उम्दा-उम्दा तस्वीरे जड़ी थीं। दो नवयुवतियों ने सोने की तश्तरियों में तरह-तरह के फल मेज़ पर चुन दिये। राजकुमारी बिल्कुल सट कर मेरे बगल में बैठी। खाते वक्त एक सहेली उम्दा-उम्दा लतीफ़े कह कर हमारा दिल खुश कर रही थी। हँसते-हँसते राजकुमारी ने कहा—'कुँवर जी, आप प्रजा से बहुत प्रेम करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति आपकी तारीफ़ करता है। वास्तव में आप विलायत के उस राजकुमार हेनरी पाँचवें की तरह हैं जिसका ज़िक्र शेक्सपियर ने किया है कि वह महाराज होते ही बिल्कुल बदल गया। रत्नजटिल मुकुट सर पर रखते ही आपके अन्दर के उज्ज्वल रत्न प्रस्फुटित हो गए।'

मैंने कहा—महारानी, तुम्हारा प्रेम रत्नजटित मुकुट और तख्त से कहीं बढ़ चढ़ कर है। तुम्हारे प्रेम ने स्वाती के बूँद की तरह मेरे हृदय में मोती भर दिया है जिसकी चमक में पिछली बुराइयाँ घास फूस और कचरे की तरह गायब हो गईं।

हम लोग बातें कर ही रहे थे कि एक दासी ने सूचना दी कि कुँवर निरंजन सिंह आये हैं। मैं फौरन् बाहर निकल आया और बड़े प्रेम से उनसे मिला। राजकुमारी भी मेरे पास आ गई।

मैंने निरंजन की तारीफ़ करनी शुरू की कि किस तरह प्रेम पूर्वक उसने राज्याभिषेक के दिन प्रेम का निदर्शन किया था। फिर मैंने शिकारगाह का ज़िक्र छेड़ दिया। और आखिर में उस शराब का ज़िक्र किया जो कि उन्होंने अपने प्रेम के निदर्शन स्वरूप विलायत से मँगवा कर मेरे पास भेजी थी।

शराब का मज़ा बहुत उम्दा था जिसको मैंने बड़ी चाव से पिया। भाई प्रेम से दी हुई चीज़ बड़ी मज़ेदार होती है।

निरंजन इन बातों को सुन-सुन कर मन ही मन जला जाता था परन्तु वह अपने गुस्से को दबा रहा था। वह फौरन् उठ खड़ा हुआ और चलने को तैयार हुआ। राजकुमारी ने कहा—'नाश्ता करके जाइये', परन्तु उसने कहा—'इस समय बहुत ज़रूरी काम है, मैं फिर कभी हाज़िर हूँगा।'

ऐसा कह कर वह चल दिया।

राजकुमारी—इन से सर्वदा होशियार रहना। कभी इन पर भरोसा न करना। आपकी ज़िन्दगी बड़ी अमूल्य है।

मैंने कहा—किसके लिए?

राजकुमारी—प्रजा के लिए।

मैंने कहा—केवल प्रजा के लिए?

राजकुमारी—नहीं, आपके दोस्तों के लिए भी।

मैंने कहा—केवल मेरे दोस्तों के लिए?

राजकुमारी—और आपकी दासी किशोरी देवी के लिए भी जो कि आपकी बड़ी अनुरागिनी है।

मैं चुप हो रहा। मैंने केवल उसके हाथ चूम लिये और वहाँ से चल दिया।

आठवाँ परिच्छेद

आज श्याम नगर के चौराहे के बाईं तरफ़ वाले महल में बड़ी चहल-पहल है क्योंकि प्रधान मंत्री दामोदर सिंह की सुपुत्री चन्द्र कला का विवाह है। राम नगर की बारात में बड़े-बड़े रईस अमीर और राजे बाराती हैं। शहर के भी बड़े-बड़े रईस, अमीर, प्रधान सेना नायक, दीवान और पुलिस के अफ़सर भी उपस्थित हैं। विशाल कमरे में सैकड़ों मेहमान बैठे हैं। अँग्रेज़ी और हिन्दुस्तानी ढङ्ग से खाने का अच्छा प्रबन्ध है। मेहमान लोग तरह-तरह के पदार्थों की आती हुई खुशबू को सूँघते हुए कई तरह के साजों के मिलाये जाने की सुरीली आवाज़ें सुन रहे हैं। नाच और गाने से लक्ष्मी बाई दर्शकों के दिल को ललचा रही है। उसकी तिरछी नज़रें जिधर फिर जाती हैं सैकड़ों आदमी बेसुध हो जाते हैं।

इसी समय एक कश्तीनुमा सोने की तश्तरी में दुलहिन के लिए ज़ेवरात निकाले गये। ज़ेवरात कई लाख रुपये के थे।

कुल ज़ेवरात में हीरे का हार अद्भुत शोभा रखता था। इतने बड़े सुडौल चमकदार और एक ही नाप के हीरों के हार पर आँख ठहरती ही न थी।

प्रधान सेना नायक साहब ने तुरन्त कह दिया कि यह हार एक लाख रुपये से कम का नहीं है। पाँच लर की करधनी भी बड़ी सुन्दर थी।

इतने में पता नहीं कहाँ से एक छुरी लपलपाती हुई मेज़ पर जहाँ ज़ेवरात रक्खे थे आकर गड़ गई। लोग ताज्जुब होकर छुरी को ध्यान पूर्वक देखने लगे। छुरी में एक कागज़ बँधा हुआ था। प्रधान मंत्री ने कागज़ को खोला। उसमें लिखा था—'प्रधान मंत्री जी, यदि बहुरुपिया को तुरन्त राज्य से निकाल दिया न जायगा या मेरे हवाले किया न जायगा तो आपकी लड़की को मैं गायब कर दूँगा।'

सब लोग हैरान थे। कोई इसका मतलब समझ न सका। सिर्फ़ मैंने और प्रधान मंत्री दामोदर सिंह ने मतलब समझा। अकेले में मैंने दामोदर सिंह से कहा—बड़ी विकट समस्या है। निरंजन ने मुझे बहुरुपिया कहा है जिससे मेरा खून उबल रहा है। परन्तु आपके दामाद और पुत्री की जान की बाज़ी लगा कर मैं निरंजन से बदला न लूँगा। मुझे जाने दीजिए अपने देश को।

दामोदर—ईश्वर के लिए ऐसा न कहो। तुम्हारे चले जाते ही निरंजन महाराजा को मार डालेगा। उनकी लाश सड़क पर पाई जायगी।

फिर उनके वध का अभियोग लगा कर वह मुझे गिरफ्तार कर लेगा और स्वयं राजा बन बैठेगा ।

मैंने कहा—यदि ईश्वर की यही मर्ज़ी है तो मैं रुक जाऊँगा । अपने लिए नहीं परन्तु आप लोगों के लिए । शादी बड़ी धूम धाम से हुई । दामोदर सिंह ने जी खोल कर रुपया खर्च किया ।

स्टेशन पर पुलिस का गहरा इन्तज़ाम था । दुलहा और दुलहिन फ़र्स्ट क्लास डिब्बे मे बैठे । उसी डिब्बे में पुलिस नायक और कई उच्च पुलिस के अफ़सर बैठे । गार्ड ने सीटी दी । इतने में दो कुली दौड़ते हुए आये और एक लम्बा सा सन्दूक उसी डिब्बे में ढकेलने लगे ।

नायक साहब ने चिल्लाकर सिपाहियों से कहा कि इस सन्दूक को बाहर फेंक दो । सिपाहियों ने उसे ढकेलना शुरू किया कि एक बूढ़ा गिड़गिड़ा कर कहने लगा—माफ़ कीजिएगा साहब, गलती से मेरे नौकरों ने इसे इस डिब्बे में रख दिया है । अगले स्टेशन पर मैं इसे उतरवा लूँगा ।

नायक साहब को दया आ गई और उन्होंने कहा—अच्छी बात है । अगले स्टेशन पर उतरवा लीजिएगा ।

गार्ड ने फिर सीटी दी और गाड़ी चल दी । गाड़ी तेज़ी से चल रह थी ।

क़रीब आध घण्टे के पश्चात् उस काले सन्दूक का ढकन धीरे-धीरे खुलने लगा और उसमें से धुआँ निकलने लगा । फिर उसके अन्दर से एक सर दिखाई दिया जो कि काले कपड़े से ढका था । धीरे-धीरे एक

जवान उस सन्दूक में से बाहर निकला । उसके हाथ में एक शीशी थी जिसमें से धुआँ निकल रहा था । थोड़ी देर में तमाम कमरा धुएँ से भर गया और कमरे के सभी लोग बेहोश हो गये ।

उस नकाबपोश ने चन्द्रकला का ज़ेवर का बक्स उठा लिया और फिर उसी सन्दूक में चला गया और ढक्कन आप से आप बन्द हो गया ।

गाड़ी के खड़े होते ही सब लोग खड़बड़ा कर उठ पड़े । चन्द्रकला भी उठ पड़ी । जेवरात का सन्दूक न पाकर दुलहिन और उसके पति कमलानन्द चिल्ला उठे । कमलानन्द ने चिल्लाकर कहा—'हाय हम लुट गये ! जेवरों का बक्स गायब है ।' नायक साहब कुछ देर तक सन्नाटा खींचे बैठे थे । अन्त में उनकी नज़र काले सन्दूक पर गई । उसे न पाकर वह और भी घबराये और फिर ज़मीन पर एक कागज़ पड़ा हुआ पाया जिसमें लिखा था—

'देख ली पुलिस की रखवाली । बहुरुपिया को देश से निकाल दो वर्ना•••'

दाँत पीसते हुए नायक ने कहा—कभी तो शैतान मेरे क़ब्ज़े में आयेगा । तब मज़ा चखाऊँगा ।

जल्दी-जल्दी सामान उतारा गया । बाराती भी उतरे । कमलानन्द और चन्द्रकला एक फ़र्स्ट क्लास मोटर में जो कि फूलों से सजी हुई थी बैठे । पीछे एक मोटर में नायक कई सिपाहियों के साथ बैठे । दोनों मोटरें तेज़ी से बढ़ीं । स्टेशन से कमलानन्द का मकान क़रीब आठ मील पर था ।

एक मोटर न जाने कब से प्रतीक्षा में खड़ी थी जिसमें कई आदमी बैठे कुछ बातें कर रहे थे।

तीनों मोटरें चल दीं। परन्तु अभाग्यवश दो ही तीन मील चलने के बाद पुलिस के नायक की मोटर बर्स्ट हो गई। अगली मोटर के ड्राइवर ने, जिसकी मोटर काफ़ी आगे बढ़ चुकी थी, पुलिस की मोटर को रुकते नहीं देखा बल्कि वह अपनी रौ में मोटर हाँकता गया।

अब मोटर ऐसी जगह से गुज़री जिधर से लोगों का आना जाना बहुत कम था। यकायक उसका भी इन्जन ख़राब हो गया। ड्राइवर फ़ौरन् उतर ढकना उठा जाँच करने लगा। इन्जन की जाँच कर ड्राइवर पहियों के पिछले भाग को देखने लगा क्योंकि टायर फटा हुआ था। इतने में दूसरी मोटर के एक व्यक्ति ने ड्राइवर से हाथ मिलाया। कुशल सवाद पूछने के बाद स्वयं सिगरेट पिया और ड्राइवर साहब को एक सिगरेट दिया। ड्राइवर ने सिगरेट प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया परन्तु एक फूँक मारते ही उसका दिमाग चकरा गया और वह बेहोश होकर गिर पड़ा। मालूम होता है कि तेज़ बेहोशी की दवा सिगरेट के साथ मिली थी वरना बिला आवाज़ इतनी जल्दी ड्राइवर बेहोश न होता। ड्राइवर के बेहोश होते ही उस का ओवर कोट और टोपी दूसरे मोटर वाले ड्राइवर ने पहन ली और गाड़ी में बैठ कर उसे स्टार्ट कर दी। यह काम इतनी फुरती से हुआ कि कमलानन्द और चन्द्रकला को ड्राइवर बदल जाने का ज़रा भी सन्देह न हुआ क्योंकि यह ड्राइवर कमलानन्द के ड्राइवर की शक्ल से मिलता-जुलता था।

गाड़ी कमलानन्द की हवेली के पास खड़ी हुई। कमलानन्द झट गाड़ी से नीचे उतरा। स्त्रियाँ आरती लिये खड़ी थीं। मर्दों ने फूल और मालाओं से कमलानन्द का स्वागत किया। कमलानन्द ने कहा—शङ्कर, गाड़ी को ठीक मकान के सामने खड़ी करो।

मगर यह क्या, ड्राइवर ने गर्ज कर कहा—बस ख़बरदार! चन्द्रकला मेरी हो गई क्योंकि दामोदर सिंह ने मेरे पत्रों को मज़ाक समझा था। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। सँभल जायँ तो अच्छा है।

इतना कह कर मोटर स्टार्ट हो गई। लोग भौचक्के से रह गये। इतने में नायक भी वहाँ पहुँच गये। मोटरें छोड़ी गईं। गोलियाँ चलाई गईं परन्तु मोटर न जाने कहाँ लोप हो गई।

नवाँ परिच्छेद

प्रधान मन्त्री दामोदर दास के पिता धर्मपाल सिंह बहुत बीमार थे । एक तो अस्सी वर्ष के वृद्ध और दूसरे फ़ालिज गिरने के कारण वह बहुत कष्ट भोग रहे थे । डाक्टरों, वैद्यों और हकीमों की दवा एक मुद्दत तक होती रही परन्तु कोई विशेष फ़ायदा न पहुँचा । दिन पर दिन उनकी हालत गिरती ही जाती थी ।

चन्द्रकला के गायब हो जाने पर उन्होंने मुझे बुलवाया । जब मैं उनसे मिलने के लिए गया, वह मुझको घूर-घूर कर देखने लगे । उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर अपने पास बिठा लिया और सबको चले जाने का संकेत किया । क्षण भर में कमरा बिल्कुल खाली हो गया । सिवाय मेरे उनके पास और दूसरा कोई व्यक्ति वहाँ न रहा । उन्होंने मेरा दाहिना

हाथ पकड़ कर अपने सीने पर रख लिया और बड़े प्रेम भाव से कहा—मरते समय आज मुझे अपने जिगरी दोस्त सेना नायक दिलावर सिंह के पुत्र के दर्शन होने से मेरा हृदय गद्गद हो गया।

मैं चौंक पड़ा। मैंने कहा—'बाबू जी, आप भूल कर रहे हैं। मैं दिलावर सिंह का पुत्र नहीं, मैं महाराजा राम बहादुर सिंह का पुत्र रघुवीर सिंह हूँ और श्याम नगर का महाराजा हूँ।'

धर्मपाल जी मुस्कराये और कहा—'मैंने यह बाल धूप में नहीं सुखाये। मैंने जो कहा है बिल्कुल सच है।'

'दिलावर सिंह की शक्ल पूर्व महाराजा के अनुरूप थी। केवल थोड़ा सा अन्तर था। मैंने महाराजा के पुत्र रघुवीर सिंह और तुम्हें बचपन में अपनी गोद में खिलाया था। बचपन में भी महाराजा और दिलावर सिंह के पुत्र की शक्ल एक दूसरे से बहुत मिलती-जुलती थी जिसको मैं स्वयं अपनी आँखों से देख चुका हूँ। मैं आपका शुभचिन्तक हूँ। मेरी तरफ़ से आपका कोई अनिष्ट न होगा। मेरा अनुमान है कि आपने महाराजा की जगह किसी कारणवश ली है। दिलावर सिंह का पुत्र दिलावर होगा। शेर का पुत्र शेर होगा। सियार कभी नहीं हो सकता। मेरी आलमारी खोलो और मैं आपको अपने मित्र दिलावर सिंह, जिसकी मृत्यु की कहानी मेरे सिवा इस समय कोई नहीं जानता, सुनाता हूँ। उनकी मृत्यु एक पहेली सी है जिसका पूरा विवरण आपके सामने मैं रख रहा हूँ।'

मैंने आलमारी खोली और उनके आदेशानुसार वह बण्डल खोला

जिसमें दिलावर सिंह की मृत्यु का सम्पूर्ण विवरण दिया था। बड़े-बड़े शब्दों में लिखा था—

'सेना नायक दिलावर सिंह का विप्लव दल के सभापति और अन्य सदस्यों से मुलाकात और सभापति से द्वन्द युद्ध।'

८ मार्च, १८६६

८ मार्च, १८६६ ई० पढ़ कर मैं चौंक पड़ा क्योंकि इसी तारीख को मेरे पिता जी मारे गये थे।

वृद्ध महाशय ने कहा कि इसको पढ़ो। मैं ज़ोर-ज़ोर पढ़ने लगा।

४ मार्च, १८६६ को विप्लव दल की बैठक हुई जिसमें यह तय हुआ कि इस दल को सुसङ्गठित और दृढ़ बनाने के लिए किसी बड़े प्रभावशाली व्यक्ति की आवश्यकता है। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि दिलावर सिंह सेना नायक को पत्र लिखा जाय और उनसे सङ्घ में शामिल होने का अनुरोध किया जाय।

अतः दिलावर सिंह को पत्र लिखा गया और उनसे ८ मार्च को सभा में उपस्थित होने की प्रार्थना की गई। पत्र में सभा की बैठक का स्थान या मकान नम्बर बिल्कुल न था और न उसमें भेजने वाले का दस्तखत ही था। उसमें लिखा था कि आठ बजे रात सङ्घ के एक सभासद आपके मकान पर आवेंगे। आप तैयार रहिएगा। दिलावर सिंह तैयार थे। सङ्घ के सभापति महोदय ठीक आठ बजे उनके मकान पर पहुँच गये।

सभापति महोदय ने दिलावर सिंह से कहा कि सङ्घ की सभा में

जाने का स्थान गुप्त है इसलिए आपकी आँखों में पट्टी बाँध दी जायगी । आप वादा कीजिए कि रास्ते में आप आँख से पट्टी उतारने का प्रयत्न न करेंगे । दिलावर सिंह ने वादा किया कि वह आँख से पट्टी हरगिज़ न उतारेंगे और सङ्घ के निश्चित स्थान के जानने का प्रयत्न बिल्कुल न करेंगे । दिलावर सिंह नायक की गाड़ी तैयार थी परन्तु सभापति महोदय ने कहा कि आप अपनी गाड़ी पर नहीं जा सकते । ऐसा करने से आपका गाड़ीवान रास्ता जान जायगा और फिर हमारा भेद खुल जायगा । मेरी गाड़ी तैयार है । आप उसी पर चलिए । नायक ने कहा—'क्या आपको अपने गाड़ीवान पर पूर्ण विश्वास है ?' सभापति ने कहा—'मेरा गाड़ीवान मेरे सङ्घ का सदस्य है ।'

नायक की आँखों में पट्टी बाँधी गई और सभापति महोदय और नायक साहब गुप्त सङ्घ की सभा को रवाना हुए ।

गाड़ी ऊबड़ खाबड़ रास्ते तय करती चक्कर करती हुई चली ।

प्रायः आध घण्टे में गाड़ी एक मकान पर जाकर रुकी । नायक साहब की आँखों में पट्टी बँधी थी । सभापति महोदय ने उन्हें उतारा । नायक साहब अभी तक उनको एक मामूली सदस्य समझे हुए थे जो कि वास्तव में सङ्घ का प्रधान था । दरवाज़े पर चौकीदार ने बाअदब सलाम किया । दोनों व्यक्ति सीढ़ियों से ऊपर कोठे पर पहुँचे । वहाँ तमाम सभासद उपस्थित थे । प्रधान ने नायक से आँख की पट्टी खोलने को कहा । नायक साहब ने पट्टी तुरन्त खोली । उन्हें एकत्रित प्रतिष्ठित व्यक्तियों को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ । प्रधान जी ने प्रवेश-पत्र दिया । नायक

साहब ने प्रवेश-पत्र पढ़ा और कहा कि मैं श्याम नगर के महाराजाधिराज का परम मित्र हूँ । मैं सब कुछ कर सकता हूँ । परन्तु उनके विरुद्ध षड्यंत्र में शामिल नहीं हो सकता ।

प्रधान जी ने कहा—हम लोग महाराजाधिराज को महाराजा नहीं मानते । हम प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करना चाहते हैं । हम लोग किसी एक व्यक्ति को कभी भी महाराजा मानने को तैयार नहीं हैं । हम पञ्चायती राज्य चाहते हैं और राजा का अस्तित्व सदा के लिए मिटा देना अपना परम कर्तव्य समझते हैं ।

नायक—आप लोग महाराजा साहब को न चाहते होंगे परन्तु मुझे उन पर दृढ विश्वास और अगाध प्रेम है । उन्होंने मुझे इतना रुतबा दिया है और मुझे अपना विश्वासी समझते हैं । मैं उनसे स्वामी-भक्ति की शपथ ले चुका हूँ । अब उनके विरुद्ध दूसरी शपथ नहीं ले सकता ।

प्रधान—(निहायत संजीदगी से कहने लगे) हमें आप पर पूर्ण विश्वास था । हमें पता चला था कि आप हमारे मतावलम्बी हैं । हमें धोखा हुआ । हम लोग अपने सङ्घ में किसी व्यक्ति को उसकी मरज़ी के विरुद्ध शामिल नहीं करते । थोड़ी सी तरक्की से आप फूले नहीं समाते परन्तु याद रखिए हम लोग यह तख्त बहुत जल्द उलट देंगे और प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करेंगे । खैर ! यहाँ से जाने के पहिले आपको शपथ लेनी होगी कि जिन व्यक्तियों को आपने यहाँ देखा है उसका किसी से कदापि ज़िक्र न करेंगे और न सङ्घ को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे ।

नायक—खूब कहा ! बागियों को स्वयं देख कर आपके विरुद्ध कोई कार्य न करूँ । यह तो अपने महाराजा के विरुद्ध बागियों का साथ देना हुआ ।

प्रधान—हम लोगों ने आपकी आँखों में पट्टी बाँधी । गुप्त रीति से लाये । आपको समझ लेना चाहिए था कि इस तरह गुप्त रूप से लाने का मतलब महाराजा से सहानुभूति न थी । जब आप समझ बूझ कर यहाँ आये तो हमारा भेद खोल देना आपका कर्तव्य नहीं है ।

नायक—मैंने मरण पर्यन्त महाराजा की स्वामिभक्ति की जो शपथ ली है उसी पर अटल रहूँगा ।

नायक के ऐसे कठोर शब्दों को सुन कर सभासदों में बड़ी हलचल मच गई । लोग आगबबूला हो गये और तलवार द्वारा नायक का मुँह सदा के लिए बन्द करने का इरादा करने लगे ।

प्रधान—नायक साहब ! आप सावधानी से बातें करें । आप को स्मरण रखना चाहिए कि हम लोग साधारण व्यक्ति नहीं हैं । यदि कोई व्यक्ति हमारा अपमान करेगा तो ईंट का जवाब पत्थर से देना हम लोग भली भाँति जानते हैं । इसलिए मेरा निवेदन है कि आप हमें बागी न कहें ।

नायक—मेरा किसी का अपमान करने का इरादा नहीं है। आप मुझे मेरे स्थान पर पहुँचा दें ।

प्रधान—जाने के पहिले आपको शपथ लेनी पड़ेगी कि आप हम

लोगों का भेद किसी से न खोलेंगे और हमारे सङ्घ का कोई अनिष्ट न करेंगे।

नायक—(अपनी तलवार पर हाथ रख कर) मैं शपथ हरगिज न लूँगा।

प्रधान—तब आप जान से मारे जायेंगे।

नायक का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। उसने अपनी तलवार निकाल ली।

कई सभासदों ने अपनी-अपनी तलावारें निकाल लीं।

प्रधान—नायक साहब, अपनी तलवार न निकालिए। वरना धोखा खाइएगा।

आप शरीफ़ आदमियों के बीच में हैं। हम लोग आप से शराफ़त बरतेंगे तब तक जब तक कि आप वादा न करेंगे परन्तु यदि आप अपने आपे से बाहर हो जायँगे तो हम लोग भी मजबूर हो जायँगे।

नायक—मैं शपथ हरगिज न लूँगा।

प्रधान—द्वार बन्द कर दो।

द्वारपाल ने द्वार बन्द कर दिया।

नायक—मुझे मेरे पुत्र की याद आ रही है जो कि केवल एक साल का है। मुझे उसकी याद कर लेने दो।

मैं चीख उठा। पिता का प्रेम मेरे हृदय में जागृत हुआ। अफ़सोस, बधिकों ने मेरे पिता को बड़ी बेरहमी से मारा होगा।

प्रधान—मेरी सलाह मान लो और शपथ ले लो।

नायक—क्या शपथ है ?

प्रधान ने एक कागज़ नायक के हाथ में दे दिया। नायक ने पढ़ा परन्तु धीरे-धीरे, अनमने भाव से। 'मैं दिलावर सिंह नायक शपथ लेता हूँ कि आज जो कुछ कि मैंने देखा और सुना है किसी से न कहूँगा और यदि कहूँ तो मुझे मौत की सज़ा दी जाय।'

नायक—क्या मैं अब जा सकता हूँ ?

प्रधान—मैं स्वयं आपको आपके घर पहुँचा दूँगा परन्तु आँख मे पट्टी बाँध कर।

नायक—अच्छी बात है। इस भयानक जगह से मुझे जल्द ले चलो। चलो बधिकों से छुटकारा तो मिला।

प्रधान—ज़बान सँभाल कर बोलो।

नायक—जो चाहे कह लो। घर में कुत्ता भी शेर बन जाता है।

प्रधान दाँत पीस कर रह गया।

नायक की आँखों में पट्टी बाँधी गई। जब गाड़ी एक पथरीली चट्टान के पास पहुँची, नायक की आँखों की पट्टी खोल दी गई।

नायक—आप मुझे यहाँ क्यों लाये ?

प्रधान—इसलिए कि आपने मेरा अपमान किया है। मुझे कुत्ता कहा है। अब आपको मुझसे युद्ध करना होगा। तलवार सँभाल लो।

नायक—खून करने का दूसरा तरीका। मैं अकेले और आप लोग तीन।

प्रधान—परन्तु मैं अकेला ही आपसे लड़ूँगा, किसी की सहायता न लूँगा।

नायक—ज्यादा बातें न बनाओ । बहादुर की तरह अकेले लड़ो। दोनों के हौसले निकल जायंगे ।

रात अँधेरी थी । दिलावर सिंह और प्रधान की तलवारें बिजली के सदृश चमक उठीं । दिलावर सिंह बड़े बहादुर थे । प्रायः एक घण्टे तक युद्ध होता रहा । दोनों रण-कुशल थे । अन्त में दिलावर सिंह का पाँव फिसला और वह पृथ्वी पर गिर पड़े । प्रधान की तलवार नायक के सीने में घुस गई और वह बेहोश हो गये । थोड़ी देर के पश्चात् उनकी मूर्च्छा जागी और वह उठ खड़े हुए । उन्होंने प्रधान के माथे पर दो भारी ज़ख्म किये परन्तु वह खड़े न हो सके और अन्त में वह सदा के लिए पृथ्वी में सो गये ।

ऐसा न हो कि लोग सोचें कि ज़बरदस्ती सङ्घ के कई आदमियों ने मिलकर दिलावर सिंह नायक की जान ली, इसलिए यह बयान लिख दिया, दो गवाहों के सामने ताकि सनद रहे और वक्त ज़रूरत काम आवे ।

द: राछपाल सिंह प्रधान
गवाह—करतार सिंह
गवाह—राम नाथ सिंह

८ मार्च, समय ९-२०, मुकाम श्याम नगर से दो मील पूर्व ।

मैंने अभी तक अपने पिता के देहान्त का विवरण नहीं सुना था । मुझे इतना मालूम था कि किसी ने मेरे पिता को ८ मार्च की रात को मार डाला था परन्तु कौन और किसने ऐसा कुत्सित कार्य किया था मुझे

मालूम न था। आज मुझे सब हाल मालूम हुआ। मेरे दिल में एक प्रकार की पीड़ा होने लगी और मैं कलेजा थाम कर बैठ गया।

वृद्ध धर्मपाल सिंह की आँखों से आँसुओं की धार बह रही थी। उन्होंने मुझे धैर्य दिलाया। फिर मैं महाराजा साहब का शिकारगाह से लेकर अब तक का पूरा क़िस्सा बयान किया। वह स्तम्भित रह गये। मैंने पूछा—'कृपा कर आप मुझे सङ्घ के उस प्रधान का पता बतायें जिसने मेरे पिता को मारा था। मैं उससे बदला जरूर लूँगा।'

वृद्ध ने कहा—प्रधान निरंजन सिंह के मामा थे। अब उनका देहान्त हो गया है। परन्तु वह सङ्घ निरंजन की संरक्षता में अब भी है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि निरंजन का चन्द्रकला के हरण में पूरा हाथ है।

मैंने वृद्ध महाशय से अपने कार्य क्रम के विषय में राय ली। उन्होंने कहा—आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। किसी तरह आप महाराजा साहब को निरंजन के हाथ से छुड़ाइए।

मैंने कहा—परन्तु मेरे पिता के देहान्त का यह पता आपको कैसे मालूम हुआ? यह सनद आपके हाथ कैसे पड़ी?

धर्मपाल—मैं भी उस विप्लवकारी संघ का सदस्य था।

मैंने कहा—आप महाराजा साहब के इतने भक्त थे, फिर आप संघ के फन्दे में कैसे फँसे?

धर्मपाल--मैं केवल थोड़े ही दिनों तक सदस्य रहा। किसी तरह फँस गया था; परन्तु आपके पिता के मारे जाने के पश्चात् मुझे आत्मग्लानि हुई और मैं इससे अलग हो गया।

मैंने कहा—कृपया बतलाइये, सङ्घ के लोग किस तरह नवयुवकों को फँसाते थे ? किस तरह आप फँसे और कैसे निकल भागे इसका ब्योरा कहिए ? मेरे हृदय में बड़ी जिज्ञासा उत्पन्न हो गई है।

धर्मपाल—अच्छा, ध्यान देकर सुनो।

दसवाँ परिच्छेद

शहर के सिरे पर एक मकान में जगदेव पाण्डे नाम का एक आदमी रहता था। उसके दो-तीन बच्चे थे। वह मनोरमा छापेखाने में काम करता था। ठीक समय पर छापेखाने जाता था। कभी एक मिनट की भी देर न होती थी। छापेखाने के कर्मचारी उससे अति प्रसन्न रहते थे। वह सच्चरित्र और सीधे स्वभाव का आदमी मालूम पड़ता था। एक दिन शाम को वह बैठा था कि दरवाज़े में साँकल खटखटाने की आवाज़ आई।

उसने दरवाज़ा खोला। आगन्तुक ने कहा—मैं संडीले से लड्डू लाया हूँ।

फिर वे दोनों अन्दर दाखिल हुए। दरवाज़ा बन्द कर दिया गया।

चन्द ही मिनट में फिर दरवाज़ा खटखटाने का शब्द हुआ। जगदेव पाण्डे ने दरवाज़ा खोला।

आगन्तुक ने कहा—'मैं संडीले से लड्डू लाया हूँ।' फिर वे दोनों अन्दर दाख़िल हुए।

इसी प्रकार दस-बारह आदमी बारी-बारी जगदेव पाण्डे के घर में गये और सब ने पहिले आदमी की भाँति कहा कि मैं संडीले से लड्डू लाया हूँ और बिला रोक-टोक घर के अन्दर दाख़िल हुए।

जब प्रायः पन्द्रह आदमी इकत्रित हो गये तब वार्तालाप आरम्भ हुई।

यही विप्लवकारी दल था और संडीले का लड्डू उनका संकेत-सूचक शब्द था।

वे धनी आदमियों के घर में डाका मारते थे और रुपया लूटकर इकट्ठा करते थे। इनमें पढ़े-लिखे लोग भी शामिल थे। जर्मनी, फ्रांस, रशिया, अमेरिका और अन्य स्थानों से बन्दूक, पिस्तौल और लड़ाई का सामान ये चोरी से मँगवाते थे और इस प्रकार अपनी ताकत बढ़ाते थे। भले आदमियों को बहका कर ये अपनी संख्या बढ़ाने की चेष्टा करते थे।

संयोगवश उसी रात को मैं भी घूमने को निकला। ज़ोर की आँधी आई। बादल गरजने लगे और बिजली कड़कने लगी। फिर वर्षा होने लगी और आकाश से ओले गिरने लगे। मैं बड़ी मुसीबत में पड़ा। बस्ती दूर थी, परन्तु रास्ते में कोई रुकने का स्थान न था। मैं बहुत तेज़ी

से भागा। थोड़ी देर चलने के बाद मुझे एक मकान दिखलाई दिया जहाँ से रोशनी आ रही थी । मकान पर पहुँच कर मैंने साँकल खटखटाई । अन्दर से एक आदमी आया ।

मैंने कहा—भाई साहब, थोड़ी देर मुझे आश्रय दीजिए । बड़े-बड़े ओले गिर रहे हैं और पानी बहुत ज़ोरों से बरस रहा है । ओलों से मैं घायल हो रहा हूँ ।

आदमी ने कहा—अच्छा, चले आओ ।

मैं अन्दर चला गया । मैंने देखा कि दस-पन्द्रह आदमी जो कि शरीफ़ मालूम होते हैं कुछ सलाह कर रहे हैं ।

मैंने एक युवक से पूछा—क्या मैं आप लोगों के साथ बैठ सकता हूँ ?

उनमें से एक ने कहा—शौक से ।

मैंने सहर्ष धन्यवाद दिया ।

फिर मुझसे और उन लोगों से बातचीत होने लगी ।

नं० १—कृपा करके अपना शुभनाम और निवास स्थान बतलाइए ?

मैंने कहा—मैं इसी शहर में रहता हूँ और मेरा नाम धर्मपाल है ।

न० १—क्या आप चक्रधर के छात्र नहीं हैं ? क्या आप ही का नाम धर्मपाल है ?

मैंने कहा—जी हाँ ।

न० १—मैंने आपकी बहुत तारीफ़ सुनी है । आपके ऐसे साहसी युवक इस शहर में क्या, इस देश में बहुत कम हैं ।

मैंने कहा—आप लोगों की दया है।

नं० १—यदि मनुष्य देश सेवा के काम करने में साहसी और वीर न हो तो वह मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं है।

मैंने कहा—आपका कहना सत्य है।

नं० १—वीर और साहसी का काम है कि वह अपने देश के लिए अपने तन, मन, धन को अर्पण कर दे।

मैंने कहा—हाँ, अगर देश के लिए जान भी देनी हो तो खुशी से देनी चाहिए।

नं० २—आप देशभक्त मालूम होते हैं; परन्तु आपको देश के लिए वास्तव में कुछ काम करना चाहिए। केवल बातों ही में टाल न देना चाहिए।

मैंने कहा—मैं देश के काम करने में सदा तत्पर रहता हूँ। मेरी इच्छा है कि शिक्षा खतम होने पर मैं अपने को देश के काम में उत्सर्ग कर दूँ।

नं० २—आपका विचार बहुत उच्च है, परन्तु देश सेवा के लिए आप कौन सी विधि अवलम्बन करेंगे?

मैंने कहा—आप ही अपना मत प्रकाश कीजिए।

नं० २—मेरा तो विचार है कि देश सेवा करने का एक मात्र उपाय है प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करना। प्रजातन्त्र राज्य ही में देश का भला है। समाज का भला है। कभी-कभी मेरे हृदय में एक भीषण प्रतिशोध की भावनायें उठती हैं और तब मेरा हृदय समाज पर विद्रोही हो उठता

है। राजा अपनी उच्छृङ्खलता के वश में होकर अपने सुख और ऐश्वर्य के नशे में ग़रीब प्रजा का अस्तित्व ही भूल जाता है। गरीब दाने-दाने को तरसता है और अपनी अन्तिम साँसें गिन-गिन कर बिता देता है। झोपड़ी के एक भाग में कुछ बाँस से लिपटी हुई भयभीत सी घास, मीनाकारी का रूप लिये कुछ चीथड़े गरीबों के खून के चूने और बेईमानी की ईंट से बने हुए बड़े-बड़े आलीशान महलों का मुकाबला कर रहे हैं। अन्तर इतना है कि गरीब समझते हैं कि उनकी झोपड़ियों के ऊपर काफ़ी स्थान रहता है, ईश्वर के नेत्र जब चाहे उनके पापों को देख सकते हैं। इसलिए पाप कर्म करते डरते हैं परन्तु अमीर अपने महलों में बैठे ईश्वर से नहीं डरते। उनका विश्वास है कि उनके पाप ईश्वर की दृष्टि तक नहीं पहुँच सकते इसलिए दिन दहाड़े पाप करने में ज़रा भी नहीं हिचकते। उनके महलों में वैभव और कामुकता का विलास रहता है। प्रतिशोध और घृणा से भर जाता है मेरा हृदय और छा जाते हैं उस पर विक्षोभ के घने बादल और तब मेरे हृदय में एक ज्वाला उठती है जिस ज्वाला में मुट्ठी भर अमीरों का जन समूह उनके ठेकेदार महाराजा जोकि जोंक की तरह गरीबों का खून चूसते हैं जल कर भस्म हो जाते हैं।

मैंने कहा—आपका वक्तव्य बड़ा सुन्दर है। आपने अपने हृदय की उठती हुई सारी वेदना, सारी कल्पना को शब्दों के जामे में पहिना कर हम लोगों के सामने उँडेल दिया है। यह आपने मेरे दिल की बात कही। मेरे दिल में भी ऐसी ही भावनायें उठती हैं। अन्तर यह है कि आप

अपनी भावनाओं को शब्दों का जामा पहिनाने में समर्थ हैं परन्तु मैं असमर्थ हूँ।

नं० ३—केवल लम्बी-लम्बी बातें बनाने से काम नहीं चल सकता। मैदान में आकर काम करने की आवश्यकता है। देश में साहसी मर्दों की कमी है।

नं० ४—मर्द की व्याख्या कीजिए।

नं० २—आजकल के मर्द हाथ मे पतली छड़ी और कलाई पर घड़ी बाँधते हैं। सर पर तो तोपों का मुंह खुला है जिससे पृथ्वी काँप रही है परन्तु इस मर्द की पतली कलाई तलवार के बोझ को भी सँभाल नहीं सकती। इतना अत्याचार हो रहा है परन्तु उनके पाँव के नीचे की ज़मीन ज़रा भी नहीं हिलती। मर्द वह है जो समुद्र की बिखरी हुई लहरों से लड़ता है। उसके हाथ खून से भरी हुई तलवारों से खेलते हैं और दिल आग के अङ्गारों से बाजी ले जाते हैं।

मैंने कहा—आप बड़े भारी वक्ता भी हैं।

नं० ४—आप देश का उद्धार करने के लिए कोन से तरीके को अवलम्बन करना श्रेयस्कर मानते हैं ?

मैंने कहा—अहिंसा से। इस पर सब हँस पड़े।

नं० ५—आपने इतिहास पढ़ा है। भला किसी ने अहिंसा द्वारा और बिना युद्ध किये कुछ प्राप्त किया है ?

'इतिहास को पढ़ने से विदित होगा कि हर एक जगह बल के द्वारा राज्य का तख्ता उलटा गया है, अहिंसा से नहीं।'

'दुरयोधन नें क्या कहा था ?'

मैंने कहा—दुरयोधन ने कहा था कि विना लड़ाई किए हुए पांडव को सुई के नोक के बराबर भी ज़मीन न दूँगा ।

इसी तरह से प्रायः दो घंटे तक विप्लव दल और मुझसे बातचीत होती रही यहाँ तक कि मैं उनका शिकार बन गया और प्रतिज्ञा पत्र पर अन्धा बन कर दस्तख़त कर दिया कि मारने पीटने, चोरी डकैती और हत्या करने में भी मैं हर वक्त उनकी मदद करता रहूँगा और यदि इसके विरुद्ध आचरण करूँ तो सभा को अख़्तियार होगा कि मुझे मृत्यु दण्ड से दंडित करे ।

इस कार्यवाही के समाप्त होने के पश्चात् उन्होंने मुझे सरदार से मिलाया । आँखों में पट्टी बाँध कर मुझे सरदार के पास ले जाया गया ।

एक खंडहर में जहाँ टूटी-फूटी इमारतें बड़ी बुरी तरह पड़ी थीं, एक गुफ़ा थी जहाँ पर एक जटाधारी साधू की कुटिया थी । कुटिया के अन्दर से एक तङ्ग रास्ता था, बीस कदम चलने पर बाईं तरफ़ एक खटका था । खटका दबते ही एक दरवाज़ा खुल गया । एक बड़ा कमरा था जिसमें ग्यारह खिड़कियाँ थीं । कमरे की दीवारों में विचित्रता थी । केवल ज़मीन की सतह को छोड़ कर कुल दीवार यहाँ तक छत भी चमड़ों से ढकी थी । इस कमरे में आने और जाने का दरवाज़ा किधर है, पता नहीं

लगता । चमड़ों में बटन लगे थे । प्रत्येक बटन में कुछ न कुछ विशेषता अवश्य थी । बटन के दबाते ही दरवाज़ा खुलता था जिसमें तरह-तरह के सामान औज़ार और मशीनें भरी पड़ी थीं । सामने मेज़ पड़ी थी और उसी के बगल कुर्सी पर एक विचित्र व्यक्ति बैठा हुआ था । उसका तमाम बदन काले कपड़े से ढका था । केवल आँखों के आगे देखने के लिए एक छेद बना था और उसमें भी शीशा लगा था । इतने ही में एक कोने में लगी हुई छोटी सी घण्टी बजने लगी । साथ ही घंटी के नीचे लगी हुई घंटी की सुई घूम कर एक जगह पर ठहर गई । उसके सामने दो का अङ्क बन गया जिसे सरदार ने गौर से देखा और तब एक बटन को दबा दिया जो घड़ी के नीचे लगा था । बटन दबते ही पूरब वाली दीवाल में कुछ हलचल सी मालूम होने लगी और चमड़े का एक टुकड़ा दीवाल से अलग हो गया । सरदार ने ज़ोर से कहा--भीतर आओ !

नम्बर २ भीतर चला गया । मैं भी उसके साथ था । दरवाज़ा बन्द करने के बाद नं० २ ने सरदार को झुककर सलाम किया और खड़ा हो गया ।

सरदार ने मुझसे कहा—'तुमने प्रवेश-पत्र पर दस्तखत कर दिया । अब तुम मेरे सहायक हुए । तुम्हारी उन्नति तुम्हारे कारनामों पर है ।' ऐसा कह कर उसने एक बटन दबाया, एक दरवाज़ा खुला जिसमें अनेक पिस्तौलें बड़ी तरतीब से रक्खी हुई थीं । सरदार ने कहा—'एक पिस्तौल ले लो ।'

मैंने एक अमेरिकन तेज़ मार वाली पिस्तौल पसन्द की। फिर दरवाज़ा खटके से बन्द हो गया और दीवाल बराबर हो गई। सरदार ने दूसरा खटका दबाया, दरवाज़ा खुला और उसमें नोट, अशरफ़ी और रुपयों का ढेर दिखाई दिया। सरदार ने मुझसे कहा कि एक मुट्ठी भर अशरफ़ी निकाल लो। मैंने झटपट एक मुट्ठी भर अशरफ़ी अपनी जेब में रख ली। इसके बाद तीसरा खटका दबते ही एक दरवाज़ा खुला। उसमें छुरियों का ढेर था। मैंने आदेशानुसार एक छुरी भी निकाल ली। चौथा खटका दबते ही एक और दरवाज़ा खुला जिसमें तरह-तरह की दवाइयाँ थीं, विशेष कर बेहोशी लाने वाली। सरदार ने मुझको कई शीशियाँ दीं और उनके प्रयोग की तरकीबें भी बतलाईं।

इसके बाद सरदार ने मेरा हाथ चूमते हुए कहा—यह लाखों रुपये की दौलत किसी एक व्यक्ति की नहीं बल्कि सब सभासदों की है। तुम अपने को इसका मालिक समझो और इसे बढ़ाने की ओर अपने सङ्गठन को मज़बूत बनाने की कोशिश करते रहो। इसके पश्चात् मैं सरदार से विदा हुआ।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

धर्मपाल ने अपनी कहानी समाप्त करने के पश्चात् कहा--बेटा, जब दिलावर सिंह की मौत हुई, मेरा दिल भर आया। मैंने सभापति महोदय से क्षमा-प्रार्थना भी की थी परन्तु जिस तरह जीभ बत्तीस दाँतों के बीच में कुछ नहीं कर सकी, उसी तरह मेरा उनका बचाने का प्रयत्न निष्फल गया। मैंने स्तीफ़ा दे दिया। साथ ही साथ उनके मरने का वृत्तान्त भी चुरा लाया।

अब निरंजन उसी विप्लव दल का प्रधान है और उसे सङ्गठित करने का प्रयत्न कर रहा है। चन्द्रकला भी मुझे पूर्ण विश्वास है उसके ही पंजे में है।

मैंने कहा—कृपया मुझे पता बतला दीजिए ताकि मैं उस की जड़ उखाड़ कर फेंक दूँ।

धर्मपाल—पता लगना मुश्किल है। उनके मिलने का स्थान बदलता रहता है। अच्छा, मैं एक पता बताता हूँ, एक गुप्त स्थान का पता जिसमें तुम अकेले जाओ, सम्भव है सफलता मिले।

मैंने कहा—कृपया जल्द बतलाइए। मैं बड़ा उत्सुक हूँ वहाँ जाने के लिए।

धर्मपाल—जान को हथेली पर रख कर यदि जाना चाहते हो तो जाओ।

मैंने कहा—मंजूर है।

धर्मपाल—सुनो, कमला पार्क से आठ गज़ पर दाहिनी ओर एक बरगद का वृक्ष है। वृक्ष में काले रङ्ग का एक यन्त्र है। यन्त्र को दबाते ही एक दरवाज़ा खुलता है। दरवाजे के अन्दर नीचे सीढ़ियाँ लगी हैं। आठ सीढ़ी के पश्चात् एक दूसरा द्वार है जिसके अन्दर एक बड़ा भारी बाग़ है। बाग में बड़े सुन्दर-सुन्दर वृक्ष लगे हुए हैं। उन्हीं वृक्षों की छाया में एक कुटिया बनी है जहाँ मेरा अनुमान है चन्द्रकला होगी। उस बाग में जाने का एक और भी रास्ता है परन्तु वहाँ पहरा रहता है।

मैंने कहा—वहाँ कितने पहरेदार हैं?

धर्मपाल—केवल उसके पाँच स्वामिभक्त दासों ही को वह भेद मालूम है। इसलिए निरंजन ने वहाँ उन्हीं के पहरे का प्रबन्ध किया है।

दामोदर से कहे बिना ही मैं ग्यारह बजे रात रवाना हो गया। वृक्ष के पास पहुँच कर खटका ढूँढ़ने में मुझे अधिक विलम्ब न हुआ। खटका

दबाते ही एक दरवाज़ा खुल गया। दरवाज़ा खुलते ही मुझे सीढ़ियाँ मिलीं। आठ सीढ़ियों से उतर कर मैं बाग में चला गया। घोर अन्धकार छाया हुआ था। मुझे एक जङ्गल दिखाई दिया। थोड़ी देर खड़े-खड़े मैं विचार कर रहा था कि किधर जाऊँ। दाहिने हाथ में नङ्गी तलवार और बायें हाथ में दो फ़ायर वाली पिस्तौल लेकर मैं कुटिया को ढूँढने लगा। मैंने जूते उतार दिये ताकि ऐसा न हो कि पाँवों की आहट पाकर लोग सजग हो जायँ। मैं बिल्ली की तरह दबे पाँव चलने लगा। कुछ दूर पर एक टिमटिमाता दीपक दिखलाई पड़ा। मैं टिमटिमाते हुए दीपक में आशा लगाये चला जा रहा था। कभी-कभी नृसिंह भगवान् का नाम याद कर लेता और प्रार्थना करता कि हे भगवन्, मुझे चन्द्रकला के प्राप्त करने में समर्थ करो। इतने में मुझे एक पद ध्वनि सुनाई दी। मैं ठिठक गया और एक वृक्ष की आड़ में छिप गया। अमावस की रात्रि थी। घोर अन्धकार छाया था; परन्तु फिर भी मैं उस युवक को जानने का प्रयत्न कर रहा था। युवक के साथ एक स्त्री थी।

स्त्री--मैंने चन्द्रकला को बहुत समझाया। साम, दाम, भय और भेद दिखा कर उसे आत्म समर्पण करने को कहा परन्तु वह पुट्ठे पर हाथ ही रखने नहीं देती।

युवक—उसे समझाने जाओ। यदि वह समझाने से न मानेगी तो अवश्य बल का प्रयोग कर उसको वश में किया जायगा। अभी मेरी स्थिति भी डांवाडोल है। देखें क्या होता है। अच्छा चलो, मैं भी उससे बातें कर लूँ।

वह दोनों चले गये परन्तु मैंने बोल से पहिचान लिया कि वह युवक निरंजन है। मैं भी भीगी बिल्ली की तरह उसके पीछे हो लिया। कुटिया के पिछले भाग में झाड़ियों के पीछे मैं चुपचाप खड़ा हो गया जहाँ से मैं सब को देख सकता था परन्तु मुझे कोई न देख पाता था।

मैंने देखा कि चन्द्रकला एक मख़मली गद्दे पर बैठी है। सात सेविकाएँ उसके चारों तरफ़ खड़ी हैं। कुछ के हाथों में सोने के ओगालदान, मूरछल इत्यादि थे और कुछ के हाथों में गाने बजाने के आलात। दाहिने बायें एक से एक हसीन परी जमाल को देख कर मैं स्तम्भित रह गया। यकायक दरवाज़ा खुला और निरंजन ने प्रवेश किया। उसके साथ में वही दासी थी जिसको मैंने उससे बातें करते सुना था। गद्दे पर बैठ कर निरंजन ने चन्द्रकला से नमस्कार किया। सब दासियाँ अपने हाथ बाँधे खड़ी थीं।

निरंजन--चन्द्रकला, छोड़ दो बेकार का हठ। मै राजा हूँ। मेरी रानी बनकर ऐश्वर्य भोगो ; सुख और चैन करो।

चन्द्रकला - मुझे न सताओ। मैं अपने स्वामी की हूँ और उन्हीं की रहूँगी। आपका मुझ पर कुछ अधिकार नहीं है।

निरंजन—मेरा अधिकार प्रेम का है। तुम्हारी शादी हो गई परन्तु प्रेम का सम्बन्ध अभी नहीं हुआ, इसलिए वह शादी शादी नहीं। भाई बहिन में खून का सम्बन्ध होता है और पुरुष स्त्री में प्रेम का सम्बन्ध। प्रेम का नाता जोड़ लो और फिर मेरा और तुम्हारा जीवन सुखमय हो जायगा।

चन्द्रकला--प्रेम का नाता जोड़ने से नहीं जुड़ता । उसे तो ईश्वर ही जोड़ता है । ईश्वर ने मेरा नाता जोड़ दिया है उनसे और मैं उन्हीं की रहूँगी ।

निरंजन--तुम सुन्दरी हो, विदुषी हो, रूपवती हो । नाम है चन्द्र पर पत्थर से अधिक कड़ी हो । मुझे मालूम होता है तुम समाज से डरती हो, पर मसल है—

समरथ को नहिं दोष गोसाईं ।

मैं प्रयत्नशील हूँ तुम्हें अपनाने के लिए । यदि तुमने मुझे ठुकरा दिया तो मेरा दिल टूट जायगा । हृदय-पटल पर उठने और गिरने वाली ऊर्मियाँ अनाथ हो जायँगी । मेरा अस्तित्व ही मिट जायगा । अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ ?

चन्द्रकला--ज़बान सँभाल कर बोलो । तुमने मेरा बड़ा अपमान किया है ।

'खूब सोच लो, विचार लो । यदि तुम मुझे इसी तरह ठुकराती रहोगी और बेइज्ज़ती करोगी तो मैं तुम्हें बल द्वारा वश में करूँगा । (तलवार निकाल कर) यदि पन्द्रह दिन के अन्दर मेरे साथ शादी करने का वचन न दोगी तो मैं इस लपलपाती हुई तलवार से तुम्हारा गला उड़ा दूँगा ।'

वह ऐसा कह कर अपना मुख काला कर चलता बना । दासियों से कहता गया कि अगर यह दुष्टा राजी न हो तो घोर कष्ट देना ।

उसके चले जाने के पश्चात् एक-एक करके सब दासियाँ चली आईं, केवल चन्द्रकला निराशा की चादर ओढ़े हुए आशा के रास्ते पर पड़ी थी। दीपक के मन्द प्रकाश में उसका मुख बड़ा सुन्दर दिखाई देता था।

इसके पश्चात् मैं उसके सामने गया। वह पहिले घबरा उठी पर क्षण भर में उसने मुझे पहिचान लिया।

चन्द्रकला—आपने मुझे बचाने का कष्ट किया। मैं किन शब्दों में आपको धन्यवाद दूँ?

मैंने कहा—चुपके से मेरे पीछे हो लो। समय बातचीत करने का नहीं है। अभी ख़तरे से मुक्ति नहीं हुई। मैं दबे पाँव जिस रास्ते से गया था उसी रास्ते से बरगद के वृक्ष के पास आ पहुँचा।

इतने में पद-ध्वनि हुई। मैं सहम गया। निरंजन के तीनों स्वामिभक्त नौकर आ पहुँचे। मैंने आव देखा न ताव चट से एक कमरे में जिसमें सीढ़ियाँ थीं चन्द्रकला को लेकर घुस गया और अन्दर से किवाड़ बन्द कर लिये।

तीनों ने दरवाज़ा पीटना शुरू किया। उन्होंने दरवाज़ा तोड़ने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु जब वह तोड़ न सके तो चुपचाप खड़े हो गए।

आवाज़ आई कि राममोहन, मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ।

मैंने कहा—बाहर ही से जो कहना हो कहो।

रामचन्द्र—पचास हज़ार रुपया लो और अपने घर लौट जाओ।

मैंने दरवाजे के सूराख़ से झाँक कर देखा। तीन आदमी पिस्तौलें लिये हुए एक जगह खड़े थे। उनका मतलब था कि ज्योंही मैं बाहर निकलूँ वह मेरा काम तमाम करें।

मैंने छोटी सी मेज़ उठाई जो कि बड़ी हल्की थी। मैंने उसके पायों को पकड़ लिया जिसका सिरा मेरे सामने निकला हुआ था। मेज़ ने मेरे सिर और शरीर को पूरे तौर से ढक लिया। तब मैंने कहा—मैं तुम्हारी शर्त मंज़ूर करता हूँ। दरवाज़ा खोल दो।

अम्बिका प्रसाद ने कहा—दरवाजा खुद खोल दो क्योंकि वह बाहर की तरफ़ खुलता है।

मैंने कहा—सिटकिनी तो मैंने खोल दी है। अब आप लोग दरवाज़ा खोल दें। यकायक दरवाज़ा खुला। वह तीनों इकट्ठे खड़े थे। मैं तेज़ी से बढ़ा। तीन गोलियाँ छूटीं। दो का वार ख़ाली गया परन्तु एक मेज़ पर लगी; परन्तु मेरे ज़रा भी चोट न लगी। फौरन् मैं उस जगह पहुँच गया जहाँ वह तीनों इकट्ठा खड़े थे। मैंने मेज़ से ज़ोर से धक्का दिया। मेज़ ने उन्हें चोट पहुँचाई और वह लुढ़कते हुए सीढ़ियों पर से नीचे गिर पड़े। मेज़ भी लुढ़कती हुई अहवरादीन के सर पर गिर पड़ी। चन्द्रकला चिल्ला उठी। मैं हँसता हुआ भाग निकला। मैंने गोली चलाई

जो कि अहवरादीन के हाथ में लग गई। पूर्व इसके कि वह उठ सकें मैं खरगोश की तरह तेज़ी से भाग निकला और अहवरादीन के घोड़े पर सवार होकर दूसरे रास्ते से मैं चलता बना। मैं बड़ी ज़ोर से हँस रहा था। रास्ते में दामोदर दास मिल गये।

दामोदर दास—आप इतना हँस क्यों रहे हैं?

मैंने कहा कि मैंने तीन दुष्टों को केवल एक चाय की मेज़ से ऐसा धक्का दिया कि वह सीढ़ियों से लुढकते हुए नीचे गिर पड़े। बस चाय की छोटे मेज़ ने खूब काम किया। मुझे तो बचा लिया परन्तु मुझे दुःख है कि चन्द्रकला न बच सकी।

बारहवाँ परिच्छेद

एक दिन मैं राजनगर की सैर कर रहा था कि कोतवाल साहब मेरे सामने आये और झुक कर मुझे सलाम किया।

मैंने कहा—आपका यहाँ कैसे आना हुआ?

कोतवाल—हुज़ूर, रामपुर से खबर आई है कि एक आदमी श्याम नगर के राजतिलक के अवसर पर आया था। वह लापता है। उसी की जाँच के लिए यहाँ आया हूँ।

मैंने कहा—उसका नाम क्या है?

उसने कहा—राम मोहन।

मेरी आँखें क़िले की दीवारों की तरफ फिर गईं और मैंने कहा—हाँ।

अब कोतवाल साहब की आँखें भी किले की तरफ़ फिर गईं। उनकी आँखें साफ़ कह रही थीं कि वह व्यक्ति राज नगर के किले में अवश्य है।

मैंने चुपके से कहा—मैं नहीं कह सकता कि राम मोहन इसमें है या नहीं।

कोतवाल—परन्तु मुझे पूर्ण सन्देह है।

मैंने कहा—यह बड़ा गहरा मामला है। होशियारी से काम लो। रिपोर्ट में लिख दो कि सन्देह है कि वह राजनगर के किले में है। इस समय मामले को दबा दो। पन्द्रह बीस रोज़ के बाद मैं स्वयं इस मामले की जाँच करूँगा। अब तुम यहाँ से फ़ौरन् श्याम नगर को रवाना हो जाओ।

कोतवाल साहब वहाँ से चल दिये।

घर से चले हुए मुझे प्रायः दो महीने हो गए थे परन्तु मैंने अपनी माता को अपना कुशल संवाद न दिया था। इसी कारण मेरे घर के सभी लोग चिंतित थे और पुलिस द्वारा मेरा पता लगा रहे थे।

मेरा हृदय माता से मिलने के लिए विह्वल हो उठा। मैंने दामोदर दास से कहा—मैं अपनी मां से मिलने के लिए अवश्य जाऊँगा। लो सँभालो अपना राज पाट।

दामोदर दास—कुछ दिन और ठहर जाइए। हमें अनाथ करके न छोड़ जाइए। आपके चले जाने से निरंजन महाराजा साहब को मार डालेगा और उसका अभियोग हम लोगों पर लगा कर हमें गिरफ्तार कर लेगा और स्वयं राजा बन बैठेगा।

मैंने कहा—आप ठीक कहते हैं। मेरा इस समय पर श्याम नगर छोड़ना बड़ा हानिकारक होगा, फिर मेरी माता का चित्र

मेरे आगे घूम गया । मुझे ऐसा लगा मानो वह मेरे लिए आँसू बहा रही है । उसके दुःख को शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता । मैं लेट गया और विचार धारा में बह चला । अपनी सन्तान के लिए माता के हृदय में न जाने कितनी आशङ्काएँ उत्पन्न होती हैं । यदि बच्चे की अकाल मृत्यु हो जाती है तो माता भी तीक्ष्ण मृत्यु का अनुभव करती है । माता के सुख और दुख की थाह लेना असम्भव है । वह अपना हित ध्यान में नहीं रखती । बच्चे के हित के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देती है, अपना अस्तित्व ही मिटा देती है । उसके जीवन में त्याग और निःस्वार्थता की छाप पाई जाती है ।

पृथ्वी पर चारों ओर अन्धकार छाया हुआ है । फिर भी अनेक तारे इस अन्धकार को आलोकित करते हैं । इन्हीं तारों की भाँति माता का हृदय निःस्वार्थ प्रेम को प्रकाशित करता है । इसी दिव्य प्रेम में परमात्मा के प्रेम की झलक दिखाई पड़ती है ।

उधर राजकुमारी अप्रसन्न थी क्योंकि मैंने विवाह करने में इतनी देर लगा दी थी । शहर निवासी भी कहते थे कि महाराजा साहब विवाह क्यों नहीं करते हैं । मैं बड़े चक्कर में था कि क्या करूँ । शहर में यह भी खबर फैल गई थी कि महाराजा साहब के एक दोस्त को निरंजन ने अपने क़िले में क़ैद कर रक्खा है । अतः मैं किशोरी देवी के पास पहुँचा । उसने मेरे सामने एक ख़त लाकर रख दिया । उसमें निरंजन सिंह ने किशोरी देवी को दावत दी थी । और यह भी लिखा था कि

पन्द्रह-बीस रोज़ के वास्ते मेरे क़िले में अपनी पद धूलि दें जिससे आपकी तबियत बहल जाय ।

मैंने ख़त को फाड़ डाला और कहा कि मैं आज्ञा देता हूँ कि निरंजन सिंह चाहे जितना बुलाये परन्तु उसके यहाँ हरगिज़ मत जाना । कह देना कि महाराजा साहब की आज्ञा नहीं है ।

प्रिय राजकुमारी, तबियत बहलाने के लिए पुस्तकों का अध्ययन करो ।

पुस्तकें ही सङ्गी हैं, वही साथी हैं । मित्र का सङ्ग किसी कारणवश कभी-कभी नहीं भी होता परन्तु पुस्तकें तो सदा साथी बनी रहती हैं । जब चाहो उनसे बातचीत करो, उनके सुख में सुख और दुख में दुख का अनुभव करो ।

कवि ने कहा है—

जो न मित्र दुख होय दुखारी,
तिनहिं बिलोकत पातक भारी ।

तेरहवाँ परिच्छेद

श्याम नगर का दरबार लगा था । महाराजा साहब तख्त ताऊस पर बैठे थे । तमाम दरबारी और जूरी साहबान अपने-अपने रुतबे के मुताबिक अपने-अपने स्थान पर बैठे हुए थे । प्रधान न्यायाधीश, प्रधान सेना नायक और राज नगर के गवर्नर, श्री निरंजन सिंह भी उचित स्थान पर बैठे थे ।

आज अमर सिंह के फाँसी की अपील महाराजा के सामने पेश थी । अदालत ने अमर सिंह को श्याम सिंह के क़त्ल के अपराध में फाँसी की सज़ा दी थी ।

न्यायाधीश ने कहा—अभियुक्त को हाज़िर करो । दरवाज़ा खुला और एक निहायत खूबसूरत व्यक्ति जिसकी उम्र उन्नीस साल से अधिक

न थी बड़े ठाट से कमरे में दाख़िल हुआ। उसके चेहरे से रौब टपकता था। ऐसा विदित होता था कि वह बड़े उच्च घराने का व्यक्ति है। ऊँचा मत्था, गज़ भर का चौड़ा सीना और लम्बी बाँहों से ऐसा विदित होता था मानो कोई योधा आ गया। ऐसे मौक़ों पर बड़े-बड़े साहसी व्यक्तियों का चेहरा पीला पड़ जाता है। दिल धड़कने लगता है और सिंह भी बकरी हो जाता है परन्तु यहाँ तो मामला बिल्कुल उलटा था। जिस तरह हनुमान जी को बाँध कर मेघनाद रावण के दरबार में ले गया था परन्तु बँधे हुए हनुमान सिंह से प्रतीत होते थे और बड़े-बड़े योद्धाओं की धोती नीचे खसकती दिखाई देती थी ठीक उसी प्रकार अमर सिंह का हाल था। दरबार में पग रखते ही उसकी तीव्र दृष्टि महाराजा और जज और जूरियों पर क्षण भर रुकी परन्तु निरंजन सिंह पर बड़ी देर तक अड़ी रही। निरंजन सिंह ने तीक्ष्ण दृष्टि से अभियुक्त की तरफ़ देखा और लाख प्रयत्न किया कि अभियुक्त की दृष्टि नीची हो जाय परन्तु ग़ज़ब का वह अभियुक्त था जिसकी दृष्टि ज़रा भी नीची न हुई। अन्त में झुँझला कर निरंजन ही को अपनी ही दृष्टि नीची करनी पड़ी। अमर सिंह पर जो जुर्म लगा था पढ़ा गया। जज का फ़ैसला और अपील भी पढ़ी गई।

प्रधान न्यायाधीश—अभियुक्त, तुम्हारा नाम ?

अभियुक्त—क्षमा कीजियेगा, न्यायाधीश साहब, मैं आपके सवाल का जवाब जिस तरह से आप पूछ रहे हैं बतलाना उचित नहीं समझता। कृपया जैसा मैं जवाब देना चाहता हूँ वैसा सवाल कीजिए वरना मैं बिल्कुल जवाब न दूँगा।

प्रधान न्यायाधीश आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने एक दृष्टि जूरियों पर डाली और फिर कुँवर निरंजन और अन्त में महाराजा की तरफ़ देखा। तमाम दरबारी आश्चर्य में डूब गये परन्तु अमर सिंह को ज़रा भी आश्चर्य न हुआ बल्कि वह पहिले की तरह गम्भीर बना रहा।

प्रधान न्यायाधीश ने कहा—तुम्हारी उम्र कितनी है? क्या इस सवाल का जवाब दोगे?

अभियुक्त—मैं अठारह साल का हूँ या यों कहिए कि मैं बीस जुलाई १८७० ई० को दस बजे रात पैदा हुआ था।

निरंजन सिंह ने जो कुछ कि सोच रहे थे इस तारीख़ को सुनते ही अपनी दृष्टि ऊपर उठाई और अमर सिंह को घूर कर देखा।

प्रधान न्यायाधीश—आपका जन्म स्थान?

अभियुक्त—मेरा जन्म स्थान शीशमहल जो कि राज नगर क़िले से दो मील पर है, हुआ।

निरंजन सिंह बड़ी घबराहट और परेशानी के कारण अपना पसीना पोंछने लगे।

'आपका पेशा?'

'पहिले मैं चोर था और अब ख़ूनी हूँ।'

न्यायाधीश—क्या अब बतलाओगे कि तुम्हारा नाम क्या है? अब मुझे मालूम हुआ कि तुम्हारे अपना नाम और वलदियत बताने में क्या रहस्य छिपा हुआ था। तुम चाहते थे कि तुम्हारे नाम के आगे चोर और ख़ूनी की डिग्रियाँ भी लगी हों। लोग अपना जुर्म बताते हुए

छिपाते हैं लेकिन तुम अपने जुर्म को लोगों के सामने रखना बड़े गर्व की बात समझते हो।

अभियुक्त—न्यायाधीश साहब ! मुझे आश्चर्य है कि आप मेरे दिल का हाल इतनी जल्दी भाँप गये। मेरे नाम न बताने का कारण आपने सचमुच समझ लिया है।

दरबारियों के आश्चर्य की कोई सीमा न रही। वह गोया आसमान से गिरे। उन्होंने बड़े-बड़े अभियुक्त देखे थे परन्तु अमर सिंह के ऐसा निर्भय जवांमर्द उन्होंने कभी न देखा था और न सुना था।

न्यायाधीश—अच्छा, अब अपना नाम बतलाओ।

अभियुक्त—मैं अपना नाम नहीं जानता हूँ क्योंकि मेरे पिता जी ने मेरा कोई नाम नहीं रक्खा था।

न्यायाधीश—अच्छा, अपने पिता का नाम बतलाओ।

अभियुक्त—मेरे पिता का नाम निरंजन सिंह है जो कि राजनगर के गवर्नर और महाराजा साहब के चचेरे भाई हैं।

दरबार पर गोया बिजली गिरी। वहाँ एक ज़बरदस्त सनसनी फैल गई।

न्यायाधीश—क्या कहा—निरंजन सिंह ? निरंजन सिंह निर्जीव सा आराम कुरसी पर पड़ा था। उसके मित्र उसको ढाढस देने लगे और कहने लगे—'यह आपके शत्रुओं का षड्यंत्र है।' कुछ लोग कहने लगे, हाथ कङ्गन को आरसी क्या ? कुछ लोग कहने लगे। अजी कोई सूरज पर भी थूक सकता है। यदि कोई थूकने

का प्रयत्न भी करे तो थूक उलटा थूकने वाले के सर पर गिरता है। परन्तु निरंजन का चेहरा उतरता ही जाता था। जितना लोग उसे समझाते थे उतना ही वह पस्त होता जाता था जिससे लोगों की शंकाएँ बढ़ती जाती थीं।

कुछ देर तक अदालत की कार्यवाही स्थगित रही। फिर प्रधान न्यायाधीश ने कड़ी आवाज़ से कहा—

'अभियुक्त, क्या तुम अदालत से मज़ाक उड़ा रहे हो या लोगों पर शरारत की एक ऐसी मिसाल पेश कर रहे हो जैसी आज तक न किसी ने देखी है और न सुनी है।

अभियुक्त—क्षमा कीजिएगा। दरबार के प्रतिष्ठितगण, मैं आप लोगों को विश्वास दिलाता हूँ कि मेरा इरादा अदालत में हलचली पैदा करने या कोई शरारत करने का बिल्कुल नहीं है। मेरी उम्र पूछी जाती है, मैं उम्र बतलाता हूँ। मेरा नाम पूछा जाता है, मैं बतला नहीं सकता क्योंकि मेरे पिता ने मेरा कोई नाम नहीं रक्खा था। लेकिन इससे क्या मैं अपने पिता जी का नाम बतलाता हूँ। अब मैं फिर कहता हूँ कि मेरे पिता का नाम महाराजा निरञ्जन सिंह है और मैं साबित करने के लिए तैयार हूँ।

अभियुक्त की बातचीत से सचाई ज़ाहिर होती थी परन्तु निरंजन के चेहरे से शक ज़ाहिर होता था। अभियुक्त का सचाई का सबूत जितना बढ़ता जाता था उतना ही निरंजन सिंह पर शक बढ़ता जाता था।

न्यायाधीश--अभियुक्त, अपना सबूत पेश करो।

अभियुक्त—क्या आप सबूत चाहते हैं? अच्छा सुनिए। मैं बीस जुलाई १८७० ई० को दस बजे रात राजनगर के किले के दो मील पर जो शीशमहल है वहाँ पैदा हुआ था। मेरे पिता ने मुझे अपने रूमाल में जिसमें उनका नाम लिखा था लपेटा। फूस की एक टोकरी में रक्खा और मुझे गङ्गा माता के अर्पण कर दिया। एक मल्लाह ने मुझे पकड़ा और मुझे कमला अस्पताल में भेज दिया जहाँ मेरी परवरिश हुई। रूमाल जिसमें मेरे पिता निरञ्जन सिंह का नाम लिखा था अब तक अस्पताल में मौजूद है।

दरबार में फिर एक जबरदस्त सनसनी फैल गई।

प्रधान न्यायाधीश—लेकिन तुम्हें यह सब बातें मालूम कैसे हुईं?

अभियुक्त--जिस मल्लाह ने मुझे पकड़ा था वह कुछ दिनों के पश्चात् अस्पताल से मुझे अपने घर ले गया। उसके कोई पुत्र न था इसलिए उसने मुझे अपना पुत्र बना लिया। उसी ने मुझे कुल बातें बतलाई हैं।

प्रधान न्यायाधीश--तुम्हारी माँ कौन थीं?

अभियुक्त--मेरी माँ बेकसूर थीं। उन्होंने यही समझा था कि लड़का मर गया है। मैंने उनके नाम जानने का प्रयत्न नहीं किया।

न्यायाधीश—पूरा-पूरा सबूत दो।

अभियुक्त—अब भी पूरा सबूत नहीं हुआ।

मेरे पिता निरञ्जन सिंह की तरफ़ देखा । तमाम आँखें निरञ्जन सिंह पर दौड़ गईं । निरञ्जन सिंह इतने आदमियों की तीक्ष्ण दृष्टि का भार सह न सका । उनके सामने अपना सर ऊँचा न कर सका । मारे शर्म के उसका सर नीचा हो गया ।

'पिता जी, प्रधान न्यायाधीश सबूत माँगते है । क्या आप चाहते हैं कि मैं और सबूत दूँ या यहीं मामले को ख़तम करूँ ?'

निरञ्जन सिंह उठ खड़े हुए । उन्होंने कहा—सबूत माँगना बिल्कुल बेकार है ।

प्रधान न्यायाधीश —बेकार कैसे है ?

निरञ्जन सिंह—मैं इस ख़ौफ़नाक जुर्म के बोझ से दबा जाता हूँ । ईश्वर मुझे मेरे कर्मों का फल दे रहा है ।

सबूत की कोई ज़रूरत नहीं है । लड़के ने जो बयान दिया है बिल्कुल सही है ।

प्रधान न्यायाधीश—राजा साहब, आप क्या पागल हो गये हैं ? क्या इस षड्यंत्र ने आपको इतना पस्त कर दिया है ? होश में आइए ।

निरञ्जन सिंह—मैं अपने होश व हवास में हूँ ।

'मै मुजरिम हूँ ।' ऐसा कह कर वह वहाँ से चल दिया ।

दरबारी लोग आश्चर्य में पड़ गये । उनकी ज़बानें बन्द हो गईं । श्यामनगर को यह अद्‌भुत बात और निरञ्जन सिंह के जुर्म स्वीकार करने

की बात सुनकर लोग दङ्ग रह गए।

प्रधान न्यायाधीश, प्रधान मन्त्री दामोदर सिंह और प्रधान सेना नायक मोहन मुरारी और महाराजा साहब और अन्य दरबारियों ने सर्व सम्मति से निश्चय किया कि निरञ्जन मुजरिम है। फिर निश्चय किया कि ऐसे पतित निरञ्जन के गवर्नर के उच्च पद पर रहने से रियासत की बड़ी बदनामी होगी। अतः उसका सामाजिक बायकाट किया जाय।

खुल्लम-खुल्ला लड़ाई छेड़ना उचित नहीं। बेकार निरअपराधियों का खून होगा।

अख़बार में अभियुक्त अमर सिंह, उसका कुल बयान, निरञ्जन सिंह का जुर्म स्वीकार करना बड़े-बड़े हर्फ़ों से छप गया। यह विशेषाङ्क श्याम नगर और विशेषकर राज नगर में बिला दाम बँटवाया गया।

निरञ्जन सिंह की बड़ी बदनामी हुई। उसकी रही सही इज्ज़त जाती रही। राजनगर के निवासी जो उसका बड़ा सत्कार करते थे उसको थूकने लगे। गली कूचे, शहर, बाज़ार में हर स्त्री-पुरुष की ज़बान पर यही चर्चा थी। जो देखो निरञ्जन को घृणा की दृष्टि से देख रहा था।

चौदहवाँ परिच्छेद

प्रधान मन्त्री दामोदर सिंह ने मुझ से कहा--धन्य है परमात्मा जिसने हमारी मदद की और निरञ्जन का मुँह काला किया। अब मैं निरंजन बच्चा को जड़ से उखाड़ कर अपनी पुत्री और महाराजा साहब को उसकी क़ैद से छुड़ाऊँगा। मैंने कहा--यदि वह महाराजा को मार डाले तो क्या होगा?

दामोदर--वह महाराजा को मारेगा नहीं। यदि वह उसे मार भी डाले तो भी कोई हर्ज नहीं। आप भी इसी कुल के हैं। आप राज कीजिएगा। हम लोग सब आपकी सेवा करेंगे। यह समाचार दिया जायगा कि निरंजन ने राम मोहन को क़ैद में मार डाला। राम मोहन के वारण्ट का क़िस्सा भी यों ख़तम हो जायगा।

मैं—और फिर राजकुमारी का क्या होगा ?

दामोदर—आपको उससे विवाह करना पड़ेगा।

दामोदर दास निरंजन से बदला लेने की तैयारी में लग गये और मैं राजकुमारी से मिलने के लिए चल पड़ा। बादल की भांति तरह-तरह के ख्यालात मेरे दिमाग में उठते और फिर चले जाते थे। बादल छट गया। दिमाग साफ़ हो गया। फिर मैंने निश्चय किया कि मैं अपने कर्तव्य से एक इञ्च भी न डिगूँगा।

राजकुमारी ने मेरा स्वागत किया। घण्टों तक मुझसे और उससे निरंजन सिंह और उसके इलज़ाम पर बातचीत होती रही।

मैंने कहा—दामोदर कुँवर निरंजन सिंह से टक्कर लेने की तैयारी में व्यस्त हैं। मैं भी उनके साथ जाऊँगा।

राजकुमारी—निरंजन बड़ा धोखेबाज़ है। आपको मैं प्रधान मन्त्री के साथ जाने न दूँगी।

मैं—तुम फ़िक्र न करो। मैं भी उससे टक्कर लेने को उत्सुक हूँ; परन्तु खुल्लम खुल्ला नहीं।

राजकुमारी—क्यों ?

मैं—उसने मेरे एक परम मित्र राम मोहन को क़ैद कर रक्खा है जिसके छुड़ाने के लिए मुझे अवश्य जाना है।

'जो न मित्र दुख होंय दुखारी
तिनहिं विलोकत पातक भारी।'

मैंने कहा---मैं हर रोज अपना हाल भेजता रहूँगा। यदि मुतवातिर दो रोज़ तक मेरी ख़बर न मिले तो तुम श्याम नगर में राजसिंहासन पर बैठ कर उचित ढङ्ग से राज करना।

राजकुमारी ने बहुत मना किया परन्तु मैं न माना और उससे विदा होकर मोहन मुरारी सेना नायक के पास पहुँचा।

मैंने कहा कि आज मैं एक भारी मामला आपके सुपुर्द करना चाहता हूँ। मैं राज नगर के वन में दामोदर के साथ जा रहा हूँ। कुशल संवाद रोज़ मैं भेज दिया करूँगा। यदि लगातार दो रोज़ तक मेरा कोई हाल न मिले तो आप निरंजन को आज्ञा दीजियेगा कि वह महाराजा को हाजिर करे। यदि २४ घण्टे के अन्दर वह महाराजा को हाज़िर न करे तो समझ लेना कि महाराजा मारा गया। फिर आप राजकुमारी किशोरी देवी को राजसिंहासन पर बिठा दीजिएगा।

सेना नायक—मुझको भी साथ लेते चलिये ताकि मैं आपकी सेवा उचित तरह से कर सकूँ।

मैंने कहा—आप श्याम नगर में रहिये और राजकुमारी की रक्षा कीजिये।

सेना नायक—फिर आप लिख दीजिये ताकि मैं आपकी आज्ञा को बिना किसी अड़चन के पूरी करूँ। मैंने हुक्म सेना नायक से लिखवाया और दस्तख़त कर दिया।

सेना नायक—उँगली में चोट के कारण आपके हस्ताक्षर में कुछ फ़र्क आ गया है। किसी को सन्देह न हो।

मैंने कहा—श्याम नगर की तोपें किस दिन के लिये रक्खी हैं यदि वह इतने छोटे सन्देह को दूर नहीं कर सकतीं ?

सेना नायक मुस्करा पड़े और मेरा हाथ पकड़ कर कहा--मैंने आपका नमक खाया है। जीवन भर आप और राजकुमारी की सेवा करूँगा। परन्तु अकेले में आपको निरंजन जैसे दुष्ट से टक्कर लेने के लिए नहीं भेज सकता। मैं भी आपके साथ चलूँगा।

मैं—प्रधान सेना नायक साहब आप मेरे बल पौरुष पर विश्वास करें। निरंजन जीवित नहीं है। वह मुर्दा है। उसे जीतने के लिए सेना की कोई आवश्यकता नहीं।

सेना नायक विस्मय में पड़ गये। मैंने उनके विस्मय को शान्त करते हुए कहा—

अनुशासन, सङ्गठन और चरित्र यह तीन चीज़ें बड़ी ज़बरदस्त होती हैं। जिस पुरुष में यह तीनों बातें रहती हैं वह पुरुष जीवित है परन्तु जब इन तीनों का सङ्गठन शिथिल हो जाता है तो पुरुष मुर्दा हो जाता है और उसका नष्ट होना अनिवार्य हो जाता है। यही सृष्टि का नियम है।

सृष्टि परमाणुओं से मिल कर बनी है। जब परमाणु शिथिल हो जाते हैं तब सृष्टि का अन्त होता है परन्तु जब तक परमाणु जागृति अवस्था में रहते हैं तब तक सृष्टि जीवित है।

वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि कुछ लोगों ने श्रीराम जी से शङ्का की कि कहाँ आप अकेले और कहाँ रावण की ज़बरदस्त सेना। आप

किस प्रकार रावण पर विजय प्राप्त करेंगे। श्रीराम जी ने कहा कि रावण के पास अतुल धन राशि है, सेना है, बल है परन्तु न उसमें अनुशासन है, न सङ्गठन और न चरित्र। इन तीनों के क्षय हो जाने से रावण जीवित नहीं है बल्कि मुर्दा है। अतः मुरदों पर जीत पाना बायें हाथ का खेल है।

इसी प्रकार महाभारत में जयद्रथ वध के पश्चात् दुर्योधन रोता हुआ द्रोणाचार्य के पास पहुँचा और कहा कि गुरु जी आपने वचन दिया था कि आप जयद्रथ की रक्षा करेंगे परन्तु आप पूरी क्यों न कर सके? उसे बचा क्यों न सके? गुरु द्रोण ने कहा—दुर्योधन, जब बड़े-बड़े महारथियों और योद्धाओं के बीच में रजस्वला पतिव्रता द्रौपदी की चीर शकुनी खींच रहा था, उस समय किसी भी योद्धा के मुँह में दाँत न थे कि वह इस घोर अत्याचार को रोकता। 'विनाश काले विपरीति बुद्धि।' पाप का प्याला भर गया। वह पाप तुम्हारे सर पर है। उसी पाप के कारण तुम्हारे सभी योद्धा मारे जावेंगे। पांडव सच्चे रास्ते पर हैं। वे विजयी होंगे।

देखो कृष्ण जी ने अर्जुन से क्या कहा था। अरे अर्जुन डर मत। कौरवों का पाप का प्याला लबालब भरा है। ये चरित्रहीन पुरुष हैं और मुरदे के तुल्य हैं। तू हिम्मत कर केवल खड़ा भर हो जा और यह सब मारे जायँगे। क्योंकि 'दुनिया की तमाम ताक़तें यदि एक बार मिल जायँ फिर भी जो कर्तव्य और धर्म पर अटल है, उसका एक बाल भी टेढ़ा नहीं कर सकतीं।'

प्रधान सेना नायक ने मेरी बात मान ली। फिर मैं उनसे विदा हुआ।

प्रधान सेना नायक से विदा होकर मैं दामोदर दास के पास पहुँचा। मैंने सारा क़िस्सा आदि से अन्त तक कह सुनाया। कुछ बातों को उसने पसन्द किया और कुछ को नापसन्द।

मैंने कहा—कल सुबह एक चुने हुए बहादुर सिपाहियों का जत्था तैयार हो जाय जो कि केवल मेरी सहायता के लिए हो। वे स्वामिभक्त और बहादुर सिपाही हों। बाक़ी सेना दामोदर की अध्यक्षता में रहे।

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन हम लोग राज नगर को रवाना हुए । जब हम राज नगर के वन में पहुँचे उस समय निरंजन का विश्वास पात्र नायक दरियाव नाथ मेरे पास आ मौजूद हुआ और कहा—मुझे निरंजन सिंह ने आपकी सेवा में भेजा है । उन्हें बहुत रञ्ज है कि वह अपने क़िले में हुज़ूर को ठहरने की जगह नहीं दे सकते हैं क्योंकि उनके आदमियों को बुख़ार आ रहा है और क़िला इस समय बेमरम्मत पड़ा है ।

मैंने कहा—बहुत ठीक है । मैं तो शिकार खेलने आया हूँ । खैर शिकारगाह में ठहर जाऊँगा । अहवरादीन की तबियत अब कैसी है ? मुस्कराते हुए मैंने कहा—मैंने सुना है कि उसके हाथ मे चोट लग गई है । अब उसकी चोट का क्या हाल है ?

दरियाव नाथ—वह अपनी चोट के लिए शीघ्र कोई दवा ढूँढ़ेगा।

मैं ज़ोर से हँसने लगा क्योंकि मैं जान गया कि अकबरुद्दीन को किस दवा की आवश्यकता थी। उसकी दवा मुझसे बदला लेना था।

मैंने कहा—आज हम लोग साथ-साथ खायँ।

दरियाव नाथ ने बहानों का ढेर लगा दिया और कहा कि मुझे महल में बहुत ज़रूरी काम है।

दरियाव नाथ—निरंजन सिंह ने एक सन्देश भेजा है।

मैं—उसका सन्देश क्या है?

दरियाव नाथ—आप अपने सिपाहियों को तीस क़दम पीछे हटा दीजिए। मैं चुपके से कहूँगा ऐसा न हो कोई सुन ले। मैंने सिपाहियों को पीछे हटा दिया और उससे बातें करने लगा।

उसने कहा—राम मोहन, इस वक्त हम लोग अकेले हैं।

मैं बिगड़ उठा और कहा—अगर तुम नहीं जानते कि महाराजा से किस तरह बात करनी चाहिए तो मेरे भाई को दूसरा नौकर ढूंढना पड़ेगा वरना इसका मज़ा मैं उसे चखा दूँगा। तुमको महाराजा कहना चाहिए।

दरियाव नाथ—माफ़ कीजिये। आखिर यह खेल कब तक खेलोगे।

मैंने कहा—जब तक मेरी ख़ुशी होगी।

दरियाव नाथ—मैंने आपके साथ मुहब्बत से बातचीत की थी परन्तु आप बिगड़ रहे हैं।

मैंने पूछा—आपकी माँ मर गई है?

दरियाव नाथ—हाँ, वह मर चुकी है ।

मैंने एक सख्त बात कह कर उसका दिल दुखा दिया था क्योंकि यह बात सारी दुनिया को मालूम थी कि इस दुष्ट ने अपने बुरे चाल चलन से अपनी माँ का दिल तोड़ दिया था ।

मैंने कहा—आख़िर सन्देशा क्या है ?

उसने कहा—निरंजन सिंह का सन्देश है कि यदि आप इस राज के हद के अन्दर से सलामती से गुज़र जायँगे तब वह आपको एक लाख रुपया देंगे ।

मैंने कहा—निरंजन से ,कह देना कि यदि वह महाराजा और चन्द्रकला को तुरन्त न छोड़ेगा तो मैं उसके क़िले की ईंट से ईंट बजा दूँगा और उसको और उसके मददगारों को ख़ाक में मिला दूँगा ।

फिर उसने एक सिपाही को बुलाया ताकि वह उसका घोड़ा लाये । उसने एक अशरफ़ी निकाल कर उस सिपाही को जो घोड़ा लाया था विदा किया । घोड़ा उसके निकट खड़ा था । दरियाव नाथ ने ऐसी हरकत की मानो वह घोड़े पर चढ़ना चाहता है । तब वह मेरी ओर झुका । उसका बायाँ हाथ उसकी पेटी में था और दाहिना हाथ ख़ाली था जिसको उसने हाथ मिलाने के वास्ते आगे बढ़ाया । मैंने भी अपना हाथ बढ़ाया । क्षण भर में उसका बायाँ हाथ मेरे ऊपर पड़ा और एक छोटी सी कटारी हवा में चमकी । मैं चौंक कर पीछे हटा । यदि मैं पीछे न हटता तो कटारी मेरे सीने में घुस जाती । पीछे हटने पर भी

कटारी मेरे बायें हाथ पर पड़ी और मैं घायल हो गया। बिना रकाब पकड़े हुए वह घोड़े पर कूद गया और तीर के समान भाग निकला। सिपाहियों ने उसका पीछा किया। पिस्तौलों से धड़ाधड़ गोलियों की बौछार होने लगीं परन्तु सब बेकार हुआ। मैं गिर पड़ा। मेरे कंधे से खून बह रहा था। मेरे स्वामिभक्त संरक्षकों ने मुझे घेर लिया और तब मैं बेहोश हो गया। कई घण्टे के बाद मुझे होश आया।

जब मैं जगा तो देखा कि दामोदर दास मेरे सामने बैठा है और मुझसे कह रहा है, फ़िक्र न करो, घाव जल्दी भर जायगा। मैंने कहा—श्याम नगर ने मुझे बड़ा रुतबा दिया है और तब तक मैं श्याम नगर के नमक से ऋण न हूँगा जब तक कि मैं निरंजन और दरियावनाथ का खून अपने हाथ से न करूँ।

करीब में एक होटल था। कल्लू होटल में और राजनगर के क़िले में भी काम करता था। मैंने उसको रुपया देकर अपनी तरफ़ मिला लिया और यह ठहरा कि क़िले का सब हाल जहाँ तक उसको मालूम हो सकेगा वह रोज़ बतलाता जायगा। उसने कहा कि महाराजा अभी जीवित हैं परन्तु वह बहुत दुर्बल हो गये हैं। दिन को दो नायक महाराजा के कमरे के बाहर रखवाली करते हैं और रात को फिर दो नायक पहरा देते हैं। क़िले का फाटक हमेशा बन्द रहता है। बीस सिपाही फाटक पर पहरा देते हैं। जब कोई क़िले में जाता है तो एक खिड़की खोली जाती है। उस आदमी के अन्दर होते ही खिड़की बन्द हो जाती है।

बादशाह का कमरा और तालाब सटा है। उसमें एक पाइप लगाया गया है। निरंजन का हुक्म है कि जैसे ही फाटक पर हमला हो और फाटक टूटने का भय हो महाराजा मार डाला जाय और वह पाइप के ज़रिये से तालाब में छोड़ दिया जाय। फ़ौरन् एक रखवाले के हाथ में हथकड़ी बेड़ी डाल दी जायगी और वह कैदी खूब चिल्लाना शुरू करेगा। पूछे जाने पर कैदी कहेगा कि मैंने निरंजन की आज्ञा के विरुद्ध काम किया था इसी कारण मुझे यह दण्ड मिला है। राज नगर के कैदी का क़िस्सा इस प्रकार समाप्त हो जायगा और निरंजन बेक़सूर ठहराया जायगा।

प्रधान सेना नायक मोहन मुरारी और किशोरी देवी मेरे पास पहुँचे। प्रधान सेना नायक मुझसे कहने लगे कि मुझको फ़ौरन् शादी कर लेनी चाहिए। मैं चाहता था कि किसी तरह इन मुश्किलात से जल्द छुटकारा पाऊँ। दो एक रोज़ रहने के बाद मैंने उनको विदा किया। इन मुश्किलात को हल करना कोई खेल न था। गुत्थी न सुलझती थी, उलझन बढ़ती थी बल्कि उस पेच में बल पड़ता था। मैंने क़िले पर आक्रमण करने की ठान ली। मैंने आठ चुने हुए और तजुर्बेकार सिपाहियों को साथ लिया और बारह बजे रात को क़िले के पिछवाड़े की तरफ़ से महाराजा की कोठरी पर जाने का विचार किया। तालाब में एक बोट थी जहाँ पर एक हथियारबन्द सिपाही का पहरा था। जब कि हम लोग वहाँ पहुँचे सिपाही सो रहा था। मैंने अपने आदमियों को तो वहीं छोड़ा और धीरे-धीरे बोट पर चढ़ गया। सिपाही गहरी नींद

में था। मैंने छूरा निकाला और उसके सीने में भोंक दिया। बिना किसी आवाज़ के वह खतम हो गया। मैंने पिस्तौल नहीं चलाई, क्योंकि भय था कि पिस्तौल की आवाज़ होने से निरंजन और उसके सिपाही जग जायँगे।

धीरे-धीरे मैं पाइप पर चढ़ गया। मुझे एक खिड़की मिली। खिड़की में छड़ लगे हुए थे और एक लैम्प जल रहा था। परन्तु मैं उसके अन्दर देख सकता था।

तब मैंने एक आवाज़ सुनी—'हे साहब, यदि आप मुझसे तङ्ग आ गये हैं तो मैं आपको छोड़ कर जाने के लिये तैयार हूँ। परन्तु जाने के पहिले आपके हाथों में हथकड़ी डाल देना अति आवश्यक है।' यह अहवरादीन था।

महाराजा ने कुछ कहना आरम्भ किया। उसकी आवाज़ में वह तेज़ी और वह खुशी न थी जिसे कि मैंने जङ्गल में सुना था जब कि मेरी उससे पहली मुलाकात हुई थी। उसने कहा—मेरे भाई निरंजन से यह प्रार्थना कर देना कि मुझे मार डाले क्योंकि मेरे अङ्ग का प्रत्येक भाग शिथिल हो रहा है। फिर शराब पीने पर वह पश्चाताप करने लगा।

अहवरादीन—आपका भाई अभी आपको मारना नहीं चाहता। जब वह आपको मारने की इच्छा करेगा तो देखिये यह बैकुंठ जाने का सीधा रास्ता तैयार है। यह पाइप आपको बैकुंठ भेजने ही के लिये बनाया गया है।

महाराजा—ऐसा ही हो परन्तु आप कृपा करके मेरे हाथों की हथकड़ियाँ खोल दें ताकि मुझे कुछ आराम हो ।

अहवरादीन—ऐसा नहीं हो सकता ।

रोशनी गायब हो गई । मैंने सुना कि दरवाज़े की चिटखियाँ बन्द कर दी गईं और तब मैंने महाराजा को सिसकते हुए सुना । मैंने उससे बात करने का साहस नहीं किया । क्योंकि यदि मैं बोल देता तो वह चौंक पड़ता और उसके दिल पर सख्त चोट लगती । यह भी भय था कि कहीं कोई सुन न ले । मैंने उस रात को कोई भी काम करने का साहस नहीं किया । अब मेरा काम यह रह गया कि सलामती के साथ बाहर निकल जाऊँ और उस लाश को कहीं दूर फेंक दूँ । यदि मैं उसे वहाँ छोड़ देता तो भेद खुल जाता और निरंजन और उसके साथी होशियार हो जाते । हमारे आदमी उस सिपाही की लाश को ले जा रहे थे कि उन्होंने सवारों को जाते हुए देखा । सवारों ने हमें पहचान लिया। वे निरंजन के स्वामीभक्त सिपाही थे । बड़ा शोर और गुल मचा । दामोदर दास ने रामचन्द्र को और मैंने अम्बिका प्रसाद को ख़तम कर दिया ।

फिर मैं दरियाव नाथ पर झपटा । उसके हाथ में तलवार थी । मैंने गोली चलाई परन्तु निशाना ख़ाली गया । वह हँस पड़ा और कहने लगा—अरे यह तो वही बहुरुपिया है । उसने पिस्तौल पर तलवार मारी और मेरी पिस्तौल अलग गिर पड़ी ।

दरियावनाथ हम लोगों का कुछ देर तक मुक़ाबला करता रहा। परन्तु शीघ्र वह तालाब में कूद पड़ा। मेरे आदमियों ने खूब गोलियाँ बरसाईं परन्तु वह निकल भागा।

दामोदर दास ने कहा—उसमें साहब है।

आख़िर कार हम लोग रंजीदा होकर अपने डेरे पर आये। मुझे सख्त रंज था कि मैं एक बदमाश को मार न सका। मैंने एक सोते हुए को मारा जो कोई बहादुरी न थी। परन्तु मुझे हर्ष था कि निरंजन के दो बहादुर स्वामिभक्त सिपाहियों को हम लोगों ने मार डाला।

सोलहवाँ परिच्छेद

कल्लू यह संवाद लाया कि चन्द्रकला भी कल इसी क़िले में लाई गई है। उसको घोर कष्ट दिया जा रहा है। दरियाव नाथ और निरंजन दोनों उस पर आसक्त हैं। निरंजन ने दरियाव नाथ को वचन दिया है कि यदि श्याम नगर का तख्त मिला तो वह चन्द्रकला से उसका विवाह कर देंगे परन्तु यदि राजकुमारी हाथ न लगी तो वह चन्द्रकला को न छोड़ेंगे।

मैंने कहा—चन्द्रकला को ढाढस देते रहना। हम लोग जल्द क़िले पर आक्रमण करेंगे।

मैंने कहा—अब महाराजा के पास कितने रक्षक रहते हैं?

कल्लू—अब उसके पास केवल दो आदमी दिन को और दो आदमी

रात को रहते हैं। परन्तु बहुत से और आदमी ऊपर वाले कमरे में रहते हैं। यदि ज़रा भी चिल्लाहट हो या सीटी बजे तो वह फ़ौरन् पहुँच सकते हैं।

मैंने कहा—क्या दरवाज़े में ताला बन्द रहता है?

उसने कहा—हाँ, ताला बन्द रहता है। उसकी कुंजियाँ दोनों नायकों के पास रहती हैं।

मैंने कहा—और पाइप के पास की कोठरी की कुंजियाँ किसके पास रहती हैं?

उसने कहा—दरियावनाथ और अहवरादीन के पास।

मैंने कहा—निरंजन का कमरा किस जगह पर है?

उसने कहा—तालाब के पास पुल की बाईं तरफ़ उसका कमरा है।

मैंने कहा—और चन्द्रकला कहाँ रहती है?

उसने कहा—निरंजन के कमरे के बग़ल में परन्तु जब वह अन्दर दाख़िल होती है तो ताला बन्द किया जाता है।

मैंने कहा—इसका क्या कारण है?

उसने कहा—दरियावनाथ चन्द्रकला से मुहब्बत करता है। निरंजन डरता है कि कहीं ऐसा न हो कि दरियावनाथ उसे भगा ले जाय।

मैंने कहा—और तुम कहाँ सोते हो?

उसने कहा—महल में बड़े कमरे में पाँच आदमियों के साथ। हम

लोगों के पास बरछे और लाठियाँ रहती हैं। हम लोगों को निरंजन पिस्तौल नहीं देता क्योंकि हम पर वह एतबार नहीं करता।

मैंने कहा—महाराजा ज़िन्दा हैं?

उसने कहा—अभी वह ज़िन्दा हैं। परन्तु उनकी हालत ख़राब है।

मैंने कहा—मैं तुमको एक हज़ार रुपया दूँगा। जब बाहर मेरे सिपाही पहुँचें तो तुम फाटक खोल दो। चन्द्रकला को इत्तला कर दो कि फाटक खुलते ही वह शोर व गुल करना शुरू कर दे।

वह काँप रहा था परन्तु मुझे उस पर भरोसा करना था।

उसने फाटक खोल देने का वचन दिया।

दामोदर दास—हम लोग निरंजन को किसी न किसी तरह से मारेंगे परन्तु यदि आप मारे गये तो हम लोग क्या करेंगे?

मैंने कहा—आप लोग राजकुमारी की सेवा कीजिएगा।

मेरी तरकीब यह थी कि सिपाहियों की सेना एक बजे रात दामोदर दास की मातहती में क़िले के फाटक को रवाना हो। यह सेना चुपके-चुपके जाय। अगर किसी से मुठभेड़ हो जाय तो वे उसे तलवार से मार डालें क्योंकि बन्दूक़ के दागने का शोर मैं नहीं चाहता था। यदि यह लोग चुपचाप पहुँच जायँ तो कल्लू फाटक खोल देगा। वह अन्दर घुस जायेंगे और महाराजा के पहरेदार को ख़तम कर महाराजा के पास पहुँच जायँगे। फिर एक जत्था क़रीब एक बजे किले

के पीछे तालाब के पास पहुँचे। मैं क़िले के पिछले भाग में अकेला जाऊँगा और चन्द्रकला के शोर व गुल का इन्तज़ार करूँगा।

मैं अकेला तालाब के पास पहुँचा और पुल से होकर चन्द्रकला के कमरे के पास ठिठक कर खड़ा हो गया और फाटक से सिपाहियों के घुसने का इन्तज़ार करने लगा। मुझे उम्मीद थी कि शोर व गुल के बाद निरंजन अपने कमरे से तेज़ी के साथ चन्द्रकला के कमरे में आयेगा और मेरी गोली का निशाना बनेगा। फिर भी चिल्लाहट मचती ही जायगी।

आश्चर्य की बात होगी यदि दरियावनाथ वहाँ न आ मौजूद हो। अगर ऐसा हुआ तो वह भी मेरी गोली का निशाना बनेगा।

चन्द्रकला मुझे कुंजियों का गुच्छा अगर देने में समर्थ हुई तो मैं जिस कमरे में चाहूँगा चला जाऊँगा। मैं सोच रहा था कि यदि दरियावनाथ महाराजा के कमरे पर पहरा देता रहेगा तो बहुत सम्भव है कि वह महाराजा को मार डाले क्योंकि वह बड़ा निर्दयी था। मैं आशा करता हूँ कि उस समय कोई दूसरा पहरा देता हो जिसमें दरियावनाथ की सी चालाकी और मक्कारी न हो। खैर मैंने परमेश्वर पर भरोसा किया और अपना सर हथेली पर रख कर महाराजा को बचाने के लिये तैयार हो गया। मैं चाहता था कि निरञ्जन को कुछ भी पता न चले ताकि वह कोई तैयारी न कर सके और आराम से सोता रहे। मैंने आज्ञा दी कि हमारा डेरा रात भर अति सुन्दर चिरागों से रौशन किया जाय और नाच और गाने का अच्छा प्रबन्ध हो। लोग समझें कि हम रङ्गरेलियों में मस्त हैं। इसीलिए मैंने कुछ सिपाही भी डेरे में छोड़ दिये थे ताकि वह और राजनगर के निवासी नाच और गाने का मज़ा लेते रहें।

मैंने प्रधान सेना नायक मोहनमुरारी को लिख भेजा कि यदि परसों सुबह दस बजे मेरा कुशल संवाद न पहुँचे तो वह सेना लेकर राजनगर में दाख़िल हो और निरंजन से कहे कि महाराजा को हाज़िर करो। यदि वह फ़ौरन् महाराजा को हाज़िर न करे तो समझ लिया जाय कि

महाराजा मारा गया। फिर प्रधान सेना नायक निरंजन को गवर्नरी से हटा कर खुद गवर्नर का पद ग्रहण करे और राजकुमारी को तख्त पर बिठाये। इस तरह मैंने पूरा इन्तज़ाम कर रक्खा था।

अमावस की अँधेरी रात थी। मुझे विश्वास था कि दीवाल की आड़ में छिपे रहने के कारण मुझे कोई देख नहीं सकता।

पिस्तौल मैंने जेब में रख ली और तलवार कमर में बाँध ली और ईश्वर का नाम लेकर घोड़े पर अकेले रवाना हुआ। फिर मैं तालाब के किनारे पहुँचा। घोड़े को वहीं छोड़ दिया और पुल पार कर बिल्ली की तरह दबक कर दीवाल की आड़ में छिप गया। यकायक मेरे ऊपर एक खिड़की खुली और मैंने चन्द्रकला की आवाज़ सुनी। परन्तु साथ ही साथ एक और आवाज़ आई। मैं समझ गया कि यह दरियावनाथ की आवाज़ है।

'निरंजन तो राजकुमारी को चाहता है। महाराजा के मरते ही वह राजकुमारी से विवाह कर लेगा इसलिए तुमको चाहिए कि मुझसे शादी कर लो।'

चन्द्रकला—मैं बक-बक पसन्द नहीं करती। तुम यहाँ से चले जाओ।

इतने में एक और कमरे की खिड़की खुली और एक ज़ोर की आवाज़ आई—'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?' यह निरंजन था।

दरियावनाथ—क्या मैं चन्द्रकला को अकेले छोड़ दूँ?

निरंजन—दरियावनाथ, इस समय झगड़ना उचित नहीं है।

दरियावनाथ—मैं तो झगड़ नहीं रहा हूँ।

निरंजन—क्या अहवरादीन अपनी जगह पर है?

दरियावनाथ—जी हाँ।

निरंजन—अच्छा, जाओ तुम आराम करो।

दरियावनाथ—मैं अभी थका नहीं।

फिर निरंजन अपने कमरे में चला गया। दरियावनाथ भी वहाँ से चल दिया।

घड़ी में एक बजा। मैं बेसब्र हो रहा था। फिर मैंने अपनी दाहिनी ओर एक हल्का सा शोर सुना। एक सियाह शक्ल मुझे नज़र आई। मैंने अपने मन में कहा--यह दुष्ट अब क्या शरारत करने जा रहा है। फिर उसने दीवाल से उतरना शुरू कर दिया। मैंने तुरन्त देखा कि दीवाल में कुछ सीढ़ियाँ कटी हुई थीं या लगाई गई थीं और हर एक के बीच में केवल अठारह इञ्च का फ़ासला था। दरियावनाथ ने अपनी तलवार दाँतों में दबाई और धीरे-धीरे पानी में उतरा। यदि केवल मेरी ही जान ख़तरे में होती तो मैं तैर कर उसके पास चला जाता और जी खोल कर उससे लड़ता और उसका काम तमाम कर देता।

परन्तु महाराजा का भी तो ख़याल था। मैंने अपने को सँभाला परन्तु मैं अपने गुस्से को कम न कर सका। मैं चुपचाप उसको देखने लगा। वह तालाब में तैरने लगा। दस पन्द्रह मिनट तैरने के बाद वह जिस रास्ते से आया था उधर ही चल दिया।

निरंजन के कमरे में रोशनदान लगे थे। मुझे अब तीन आदमियों को देखना था। दो तो महाराजा की रक्षा कर रहे थे और गणेश प्रसाद अपने बिस्तर था।

मैं हर तरह अपने को ख़तरे में डालने और तीनों को ख़तम कर देने के लिए उत्सुक था।

मैंने दस मिनट तक इन्तज़ार किया होगा। तब मैंने एक कुंजी की आवाज़ सुनी जो कि होशियारी से और धीरे-धीरे घुमाई जा रही थी।

मेरे आदमियों के पहुँचने के बहुत देर पहिले एकबारगी उस कमरे से एक ज़ोर की आवाज़ सुनाई पड़ी। यह आवाज़ चन्द्रकला की थी।

निरंजन बचाओ, निरंजन बचाओ। दरियावनाथ……।

मेरा अङ्ग-अङ्ग काँप रहा था और मैं ऊपरी ज़ीना पर खड़ा था। मैंने अपने दाहिने हाथ से फाटक की चौखट को पकड़ लिया, मेरी तलवार बायें हाथ में थी।

निरंजन ने चिल्ला कर कहा—अरे मामला क्या है? उसका जवाब फिर उन्हीं शब्दों में दिया गया।

निरंजन बचाओ, दरियावनाथ……।

यह आवाज़ दरियावनाथ ने भी सुनी। अपना नाम सुनते ही वह झट चन्द्रकला के कमरे में आया।

निरंजन ने समझा कि दरियावनाथ चन्द्रकला से अत्याचार कर रहा है। इसलिए वह तलवार लेकर दरियावनाथ पर झपटा।

तब मैंने तलवारों के चलने की आवाज़ सुनी जो कि एक दूसरे के ऊपर गिर रही थीं। साथ ही साथ मैंने क़दमों की आवाज़ भी सुनी। मैं इस घटना को इतनी तेज़ी के साथ बयान नहीं कर सकता जितनी तेज़ी से वह हुई। क्योंकि ऐसा ज्ञात हुआ कि यह सब एक बारगी हुई। चन्द्रकला चिल्ला रही थी। खिड़की बिल्कुल खुली थी और ऐसा विदित होता था कि निरंजन घायल हो गया है। दरियावनाथ तलवार लिये खड़ा था और कह रहा था कल्लू, यह चोट तुम्हारे लिए है। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि कल्लू निरंजन को बचाने के लिए वहाँ आया था। फिर वह अपने वादे के अनुसार दरवाज़ा क्योंकर खोल सकता था। निरंजन की आवाज़ धीमी पड़ गई थी और ऐसा मालूम होता था कि वह घायल हो गया है और चिल्ला कर कह रहा है—मदद करो, मदद करो।

दरियावनाथ हँस रहा था और अपनी तलवार को घुमाता हुआ तालाब में कूद पड़ा। तब उस पर क्या गुज़री मैं कह नहीं सकता क्योंकि उसी समय गणेश प्रसाद की पतली शक्ल दरवाज़े के अन्दर से

मेरे नज़दीक दिखाई पड़ी, अतः मैंने उस पर वार किया और उसको बिला आवाज़ वहीं ख़तम कर दिया । जब मैंने उसकी जेब टटोली तब मुझे कुंजियों का एक गुच्छा मिला । सबसे बड़ी कुंजी मैंने दरवाज़े के ताले में लगाई । वह लग गई । कुंजियों को मैंने जेब में रख लिया और आगे को बढ़ा । अन्दर एक धीमा चिराग जल रहा था । मैंने उसे उठा लिया और खड़ा होकर सुनने लगा ।

मैंने एक आवाज़ को यह कहते हुए सुना—आख़िर यह मामला क्या है । दूसरी आवाज़ आई—'क्या हम उसे मार डालें ?' मैंने चिराग़ बुझा दिया और आगे बढ़ा ।

अब एक अजीब मुश्किल पेश हुई । मैं चला जा रहा था कि मेरा पैर फिसला और मैं गिर पड़ा ।

राधे मोहन वहाँ खड़ा था । उसके हाथ में तलवार थी और अहवरादीन बिस्तरे पर बैठा था । मुझे देख कर वह घबरा गये । राधे मोहन कुछ दब गया और अहवरादीन ने अपनी तलवार ज़ोर से पकड़ ली । मैं राधे मोहन पर झपटा और एक ही वार में उसको ख़तम कर दिया । मैं मुड़ा परन्तु अहवरादीन वहाँ न था । उसने अपने मालिफ की आज्ञा के अनुसार मेरे साथ लड़ाई करके मामले को बिगाड़ा नहीं । वह महाराजा के कमरे की तरफ़ दौड़ा । उसने दरवाज़े को खोला और महाराजा को मार डाला होता यदि महाराजा का स्वामिभक्त डाक्टर उसके सामने खड़ा न हो जाता । अहवरादीन ने डाक्टर के जिस्म में तलवार घुसा दी और वह गिर पड़ा । फिर वह महाराजा पर हाथ साफ़ करने ही जा रहा था कि मैं पहुँच गया और उस पर झपटा । उसने महाराजा को छोड़ दिया और मेरी तरफ़ मुड़ा । फिर हम दोनों तलवारों से एक दूसरे से लड़ने लगे । हम एक दूसरे से खूब लड़े । वह बहादुर था और मेरे वार को रोक लेता था । लड़ते-लड़ते मैं थक गया । न मैं जीतता था और न वह । मैंने देखा कि वह हँस रहा है क्योंकि उसने मेरे बायें बाज़ू को घायल कर दिया

था। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह मुझे मार डालता और तब महाराजा को भी मार डालता। मैंने ऐसा बहादुर शख्स अपने जीवन में कभी नहीं देखा था।

जिस वक्त मुझसे और अहवरादीन से घमासान लड़ाई हो रही थी महाराजा जो कि क़रीब-क़रीब पागल हो रहा था और जिसका शरीर घुल चुका था ज़ोर से चिल्लाने लगा।

अहा, यह तो मेरा भाई राम मोहन है। मैं तुम्हारी मदद करूँगा। वहाँ और कोई चीज़ न थी। अतः उन्होंने एक कुर्सी उठा ली। वह केवल कुर्सी को ज़मीन से उठा कर मेरे पास ला सकता था जिससे कुछ फ़ायदा न हो सकता था। वह हमारी तरफ़ कुरसी लिए हुए आया जिससे मेरे दिल मे कुछ उम्मीद पैदा हो गई।

मैंने कहा—चले आओ, चले आओ। कुरसी को इसके पैरों पर गिरा दो।

महाराजा खुश होकर हँसने लगा और कुरसी को धक्का देकर अहवरादीन के ऊपर गिरा दिया।

अहवरादीन दाँत पीस कर महाराजा पर झपटा और उसके मत्थे में एक बड़ा घाव लगा दिया।

महाराजा चिल्ला कर गिर पड़े। फिर वह बदमाश मेरी तरफ़ बढ़ा। परन्तु खुद उसके हाथों ने उसकी तबाही का सामना पैदा कर रक्खा था। जब कि वह मेरी तरफ़ मुड़ रहा था, उसका पैर उस खून पर पड़ा जो कि मुर्दा डाक्टर के बदन से बह रहा था। वह फिसल गया और धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा। मैं बाज़ की तरह उस पर झपटा और उसका गला काट दिया।

फिर मैंने महाराजा की नब्ज़ देखी। महाराजा बेहोश थे परन्तु नब्ज़ चल रही थी। महाराजा मरे नहीं थे केवल घायल हो गये थे। उनके माथे पर एक बड़ा घाव हो गया था। बाहर की तरफ़ बड़ा शोर

व गुल हो रहा था । मैंने महाराजा को वहीं छोड़ा और निरंजन के कमरे की तरफ़ रवाना हुआ ।

मैं बहुत थक गया था । परन्तु मैं आगे बढ़ा और एक अद्भुत दृश्य देखा । निरंजन की लाश पड़ी थी ।

नौजवान दरियावनाथ हँस रहा था और अपने हाथ में तलवार लिए बे खौफ़ खड़ा था । मुझे उस हँसी से यह मालूम हुआ कि मेरे आदमी अभी तक वहाँ नहीं आये थे क्योंकि अगर वह आते तो दरियावनाथ को अवश्य पकड़ लेते ।

वहाँ मे ढाई बज गये थे । या परमेश्वर अभी तक दरवाज़ा नहीं खोला गया था और मेरे आदमियों का कहीं भी पता नहीं ।

मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मेरे आदमी वहाँ आये ज़रूर होंगे परन्तु मुझे उस जगह पर न पाकर समझे होंगे कि मैं मारा गया । शायद वह लोग प्रधान मन्त्री के पास वापस गये हों और महाराजा और खुद मेरी मौत का हाल साथ लेते गये हों । फाटक भी कल्लू ने नहीं खोला ।

इतने में पीछे की तरफ़ बड़ा शोर व गुल हुआ । मैं बहुत खुश हुआ कि मेरे आदमियों ने फाटक तोड़ कर क़िले में घुस पड़े । अब मैं बेफ़िक्र हो गया । मैं दरियावनाथ पर झपटा । मुझसे और उससे खूब लड़ाई हुई । वह भागा । मैंने उसका पीछा किया । परन्तु वह मुझसे तेज़ भाग सकता था । जङ्गल में कई घण्टों तक हम लोग लड़ते रहे । परन्तु किसी की भी जीत न हुई । एक लड़की घोड़े पर जा रही थी । उसने उससे घोड़ा छीन लिया और उस पर चढ़ कर भाग निकला । मैंने गोली चलाई परन्तु निशाना खाली गया । मुझे बड़ा दुख हुआ कि मैं दुष्ट को मार न सका । अतः मैं घास पर लेट गया ।

सत्रहवाँ परिच्छेद

मेरे सिपाही ठीक समय पर तालाब के पास पहुँचे थे। मुझे तलाश किया परन्तु न पाया। निराश होकर वह क़िले के फाटक पर पहुँचे। फाटक तोड़ डाला गया और वह उसके अन्दर घुसे। फिर उनसे और निरंजन सिंह के सिपाहियों से घमासान लड़ाई हुई परन्तु महाराजा साहब के चुने हुए स्वामिभक्त सिपाहियों के आगे उनके पैर उखड़ गये। कुछ तो मौत के घाट उतरे बाक़ी भाग निकले।

अन्दर उन्होंने डाक्टर और कइयरुद्दीन का मृतक शरीर पाया। फिर वह महाराजा के पास गये। वह बेहोश थे। चन्द्रकला उनके पास बैठी उनकी देख भाल कर रही थी।

उनकी नाड़ी चल रही थी। दामोदर दास ने कहा—यदि जल्द इलाज होगा तो महाराजा साहब चंगे हो जायंगे। निरंजन सिंह की लाश को दरियावनाथ के पलङ्ग पर लिटा दिया गया और महाराजा साहब को निरंजन सिंह के पलङ्ग पर लिटाया गया। कमरे से गुजरते हुए उन्होंने दो सिपाहियों को मरा हुआ पाया। दामोदर दास ने कहा—वह यहाँ ज़रूर आया था और उसी ने इन लोगों को मारा है। फिर महाराजा साहब के घावों की मरहम पट्टी हुई और डाक्टर हुलास राय का इलाज शुरू हुआ।

सब काम से छुट्टी पाकर दामोदर और प्रभुदयाल ने मेरी तलाश शुरू कर दी परन्तु मुझे कहीं न पाया।

फिर संवाद पत्रों में दिया गया कि महाराजा साहब के एक दोस्त को निरंजन सिंह ने अपने किले में बन्द कर रक्खा था। महाराजा साहब शिकार खेलते राज नगर पहुँचे। वह अपने चन्द साथियों के साथ निरंजन से

मिलने आये परन्तु निरंजन और उसके नायकों ने उनके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया। बातों-बातों में बात बढ़ गई। महाराजा साहब और निरंजन से लड़ाई हुई जिसमें महाराजा साहब घायल हुए और निरंजन सिंह और उसके चार स्वामिभक्त नायक मारे गये और दरियावनाथ भाग निकला।

दामोदर दास ने श्याम नगर के प्रधान सेना नायक मोहन मुरारी को बुला भेजा। उन्होंने यह भी कहलाया कि महाराजा का हुक्म है कि राज कुमारी अभी राज नगर न आवे।

जब यह समाचार श्याम नगर में पहुँचा तब शहर में बड़ी सनसनी फैली। प्रधान सेना नायक फ़ौरन् अपनी सेना लेकर राज नगर को रवाना हुए। हालांकि राजकुमारी को मना किया गया था परन्तु वह न मानी। वह नहीं चाहती थी कि वह श्याम नगर में रहे और उसका प्रेमी राज नगर में घायल पड़ा हो। अतः वह भी राज नगर को रवाना हुई।

दामोदर दास ने महाराजा को तो वहीं छोड़ा और मेरी खोज में रवाना हुआ। उसने तमाम जंगल छान डाला।

आखिर उसने मुझे ढूंढ़ ही निकाला। जब वह मुझसे मिला वह खुश हुआ। मैं समझता हूँ कि जिस क़दर खुशी दामोदर दास को मुझसे मिलने से हुई थी उतनी शायद ही किसी आदमी को हो सकती है चाहे उसका सगा भाई ही क्यों न मिल जाय। मैंने उसको सारा किस्सा संक्षेप में कह सुनाया।

मैंने पूछा—महाराजा का क्या हाल है?

उसने कहा कि वे जीवित हैं परन्तु बेहोश हैं। इलाज होने से अच्छे हो जायँगे।

मैंने कहा—परमेश्वर को धन्यवाद!

हम लोग बातें कर ही रहे थे कि उधर से प्रधान सेना नायक और

राजकुमारी का आगमन हुआ। मैं पेड़ की आड़ में छिप गया परन्तु वह किसान की लड़की जिससे दरियावनाथ ने घोड़ा छीना था राजकुमारी का नाम सुनते ही उनसे मिलने के लिए दौड़ी। वह उन के पास दौड़ी गई और कहा—राजकुमारी साहबा, महाराजा साहब झाड़ियों के पीछे लेटे हैं।

राजकुमारी—क्या बकती है? महाराजा तो राजनगर के किले में हैं। यहाँ कैसे आये?

दामोदर दास—यह झूठ बकती है। भाग जा यहाँ से। महाराजा यहाँ कहाँ से आते?

लड़की—महाराजा घायल ज़रूर हैं। परन्तु वह महल में नहीं हैं बल्कि झाड़ियों में हैं। वह दरियावनाथ से लड़ाई कर रहे थे जिससे उनको चोट लग गई है। आप मेरे साथ चलिए। मैं आपको दिखला दूँगी।

दामोदर दास ने बार-बार कहा परन्तु लड़की ज़िद करती ही रही। आख़िर राजकुमारी ने कहा—'मैं तो उन्हें देखूंगी।' और वह लड़की के साथ चल पड़ी। प्रधान सेना नायक और दामोदर दास भी उसके पीछे चले।

जब मैंने उनको आते हुए देखा मुझे बड़ी परेशानी हुई। राजकुमारी दौड़ पड़ी और कहने लगी—दामोदर दास, झूठ क्यों बोलते थे? यही तो महाराजा हैं।

मैंने कहा—राजकुमारी, मैं महाराजा नहीं हूँ। महाराजा राज नगर के क़िले में हैं।

राज कुमारी ने कहा—यही तो गजमुक्ता का हार है जिसे मैंने आपको उस दिन दिया था जब आप मेरे महल में पधारे थे।

मैंने कहा—आप लोग किले को जाइए, वहाँ आपको सब हाल मालूम हो जायगा। मैंने कहा कि यहाँ कुछ कहने सुनने का मौक़ा नहीं है। राजकुमारी ज़िद करती रही और मुझे छोड़ने पर राज़ी होती ही न थी परन्तु मैंने उनको जाने पर मजबूर किया।

अठारहवाँ परिच्छेद

रात को मैंने राज नगर में आराम किया। सुबह होते ही मैं महाराजा के पास पहुँचा। वह बिस्तरे पर थे और डाक्टर हुलास राय बैठे थे। डाक्टर ने मुझसे कहा—आप यहाँ ज्यादा देर नहीं रह सकते। महाराजा ने मुझको पहचान लिया और मुझसे हाथ मिलाया। मैंने वह गजमुक्ता का हार जो राजकुमारी ने मुझे दिया था महाराजा के गले में डाल दिया और कहा—मैंने इसका बुरा प्रयोग नहीं किया।

महाराजा ने कहा—मेरे भाई! मैं तुम से बहुत खुश हूँ। तुमने मेरे साथ बड़ा एहसान किया है। यदि तुम न होते तो मैं कैदखाने ही में मर जाता। मैं चाहता था कि तुमको हमेशा अपने साथ रक्खूँ और सब पर ज़ाहिर कर दूँ कि तुमने मेरे साथ क्या एहसान किया है परन्तु दामोदर दास और प्रधान सेना नायक की राय नहीं है।

मैंने कहा—महाराजा, आज रात को मैं अपने घर को वापस जाऊँगा। डाक्टर ने मुझे जाने का इशारा किया और मैं वहाँ से चल दिया।

दामोदर दास ने मुझसे कहा—राजकुमारी ने आपको याद किया है।

मैंने कहा—उनको सब हाल मालूम है?

दामोदर दास—हाँ, वह सब जानती हैं।

फिर मैं उसके कमरे में गया। कमरा खूब सजा हुआ था और वह चुपचाप खड़ी थीं।

मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा—राजकुमारी, मैंने तुम्हें धोका ज़रूर दिया है, परन्तु सतीत्व पर आँच आने नहीं दिया। ईश्वर मेरे अपराध को क्षमा करे।

उसने कहा—लोगों ने तुम्हें ऐसा करने पर मजबूर किया था । तुम्हारा इसमें क्या अपराध ।

मैंने कहा—मैं आज रात को चला जाऊँगा ।

राजकुमारी—कल और ठहर जाइये । कल जन्माष्टमी का उत्सव है । कल मुझ से राधेश्याम के मन्दिर में चार बजे प्रातः काल मिलो ।

रात को मैं बिस्तरे पर लेटा-लेटा सोच रहा था कि कल जन्माष्टमी है । मन्दिर सजा होगा । दिन में मन्दिर में भीड़ हो जाती है अतः राजकुमारी ने प्रातः काल ही पूजा करने का निश्चय किया है । मुझे भी निमंत्रण दिया है । मुझमें कवि की भाँति भावनायें न थीं । लेखक होने के कारण मेरी भावनाओं की श्रेणियाँ थीं । कल प्रातः काल मेरी और राजकुमारी से मुलाकात होगी, इन्हीं विचारों में मैं उलझ गया । चार बजे सुबह मैंने दरवाजा खोला और मन्दिर की तरफ़ टहलना शुरू किया । रात्रि का अन्धकार धीरे-धीरे कम हो रहा था । वास्तव में सवेरे उठने वालों के लिए भी अभी रात्रि थी । देखता क्या हूँ कि एक स्त्री आ रही है जो कि साक्षात् देवी की मूर्ति प्रतीत होती है ।

वह जूही सी निर्मल, निर्झर की गति सी सरल और जुगनू की दिवट जैसी निरहङ्कार थी । मैं वृक्ष की आड़ में खड़ा था । उसने मुझे नहीं देखा और न मैंने दिखाने का प्रयत्न ही किया । मैं विचार सागर में डूब गया । मैं निश्चय से डगमगाने लगा । कर्तव्य और प्रेम के बीच संघर्ष हो रहा था । प्रेम और उन्माद का साथ था परन्तु कर्तव्य अकेला था । मैं सोचने लगा, राजकुमारी मेरे लिए पहेली है । उच्छृङ्खलता के स्थान पर कितनी गम्भीरता है उसके मुख पर । कालिज की तितलियाँ और यह राजकुमारी । एक ओर अपनी चहचहाट से रङ्ग बिरंगे सैंट, पाउडर से नवयुवकों को अपनी तरफ़ आकर्षित करने का प्रयत्न और दूसरी ओर निर्मल गङ्गा की धार की तरह धीरे-धीरे बहना । पवित्रता की साक्षात् मूर्ति । मेरा हृदय तब भावनाओं से भर गया ।

विद्रोही हो उठा मेरा हृदय। मैंने राजकुमारी से सच्चा प्रेम, पवित्र प्रेम किया था। अपनी जान की बाज़ी लगा कर महाराजा की घोर यातना और कष्ट का अन्त किया था। क्या उसके उपहार में मुझे राजकुमारी नहीं मिल सकती? क्या सच्चे प्रेम को दबाना पाप नहीं है? फिर मेरे हृदय में द्वन्द उठता और राजकुमारी का चित्र मेरे सामने आ जाता। वही गङ्गा की धारा की तरह मन्द-मन्द निर्मलता, शीतलता और पवित्रता लिये हुए बहना। उस प्रेम गङ्गा की प्रवाहित धारा में मेरी वासना और विकार घास, फूस और कचरे की तरह बह गये। मेरे हृदय से एक पुकार उठी—'पागल कहीं का। त्याग का स्थान प्रेम से ऊँचा है। फिर त्याग तो प्रेम की पहिली सीढ़ी है।'

राधा कृष्ण की मूर्ति के सामने राजकुमारी फफक-फफक कर रो रही थी।

मैंने कहा—राजकुमारी, धैर्य धरो। जीवन स्वयं एक हल चल है एक, बवंडर है। जो वीर पुरुष स्थिरता से खड़ा रहता है वही विजयी होता है। वास्तव में आपके हृदय में प्रेम का अंकुर उग आया है परन्तु याद रक्खो—कर्तव्य का दरजा प्रेम से ऊंचा है। आपका कर्तव्य अपने पति से प्रेम करना है, मुझसे नहीं। हम सरिता के दो फूल हैं जो कभी भी नहीं मिल सकते। अगर मिलना चाहें तो भी नहीं।

राज०—हे कृष्ण, मैं आज से दिन-रात आपकी आराधना करूँगी। मुझे ज्ञान दो और माया को हर लो।

मैं—राजकुमारी, मुझे विदा करो। अच्छा, श्री चरणों में प्रणाम।

राज०—ज़रा ठहर जाइये। कुछ दिन और रह जाइये।

मैं—स्त्री बालू के स्तम्भ के समान है। हवा का ज़रा सा झोंका आया स्तम्भ ढह गया। स्त्री तिनका और पुरुष चिनगारी, इसलिये आग का तिनके के साथ रहना अनुचित है।

राज०—कुछ दिन और मेरे साथ रहो।

मैं—मुझे मजबूर न करो। मुझे क्षमा करो।

राज०—अच्छा जाओ। उसकी आँखों से विरह के आँसू बह रहे थे। उसने चरणों पर गिर कर कहा—जाओ, सदा के लिए जाओ। आप योगी हैं, तपस्वी हैं और देवता हैं। ईश्वर आपका मार्ग अधिक सुगम करे। यही मेरी प्रार्थना है। परन्तु एक बात माँगती हूँ। वह यह कि जब आप ईश्वर का ध्यान करें उस समय मेरे लिये यह प्रार्थना अवश्य करें कि वह मुझे मोह और माया के फन्दे से अलग कर दे। और कर्तव्य पर अटल रक्खे।

मैं—राधा कृष्ण की मूर्ति के सामने शपथ करो कि मुझे भूल जाओगी सदा के लिये और अपने पति देव से ही प्रेम और भक्ति रक्खोगी।

राजकुमारी ने कह दिया—हाँ। मुझे बड़ा सन्तोष था कि जो खेल मैं खेला उसमें मैंने सच्चे प्रेम और त्याग का उच्च आदर्श स्थापित किया। मैंने सच्चे प्रेम की वह ज्योति जला दी जिसके आलोक के सहारे जनता अपना रास्ता कभी भूल नहीं सकती।

सच्चे प्रेम की विजय हो।

मैं चल पड़ा अपने घर। अपनी पूज्य माता से मिलने। मेरी माँ का चित्र मेरी दृष्टि के सामने आ गया और उनका प्रेम मेरे हृदय में उमड़ आया।

द्वार पर प्रधान मन्त्री मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे।

❀ समाप्त ❀

मुद्रक—जागृति प्रेस, प्रयाग